तब आयुध गुरु-शाप से, हुए वीर्य-बलहीन,
क्या मेरे भी हो चुके, तेरे से ही दीन ?
क्या मैं तेरी भांति ही, भागा तज सग्राम ?
वा तुझ सा हूं सूत-सुत? अरे क्षुद्रता-धाम !
बदला लेने के लिये निज पितु-बध का आज
अस्त्रानल में भस्मकर सारी शत्रु-समाज—
क्यों न क्रोध और दुःख की, करूं पूर्ण उपशांति
निज पौरुष दिखला अभी, दूर करूं तव भ्रान्ति ?

कर्ण—अरे बकवादी, कोरे घमंडी, लड़के
समर मध्य हो! आज ही धृष्टद्युम्न-भय-त्रस्त,
तेरे पितु बलधाम ने, त्यागे शस्त्र समस्त,
हों निर्वीर्य सवीर्य वा, आयुध मेरे पास,
किंतु न मैंने तज उन्हें, करवाया उपहास,
क्या समझा है मुझे भी, निज पितु सा डरपोक ?
तेरी उलटी समझ पर होता मुझ को शोक।

अश्व—(क्रोध से) अरे रथकार-कुल-कलंक ! राधा-गर्भभार ! आयुधानभिज्ञ ! पिताजी परभी आक्षेप करता है ? अरे

वीर भीरु जैसे भी थे वे,
सब त्रिभुवन में हैं विख्यात,
जो कुछ रण में किया उन्हों ने,
सब वीरों को है वह ज्ञात,

शस्त्र त्यागने का भी कारण,
धर्मराज जानते तमाम,
किंतु भला तू क्या जानें
जो भागा था तज कर संग्राम ?

कर्ण—(हंसकर) मैं ऐसा ही बड़ा डरपोक हूं और तू तो बस बल-विक्रम का पुतला ही है- तेरे पिता जी का स्मरण करके मुझे बड़ा संशय होता है कि तू जाने क्या कर डालेगा-अरे मूर्ख! आयुध न हो तो वीर लोग बल से ही शत्रु का वारण कर सकते हैं। परन्तु तेरे पिता पर यह भी न हुआ, चुपके अबला की भांति बैठे २ अपने केश खिंचवा कर अपमान कराया किये! वाह

ऐसे ही यदि हुआ करें संग्राम,
तो भुवि से मिटजाय 'वीर' का नाम....

अश्व—(रोककर, क्रोध से कांपता हुआ) अरे दुरात्मा, राजा के कृपापात्र सूताधम, बकवादी!

रण में रोका कर न पिता ने द्रुपद-तनयका,
इसका कारण हो दुख का, अथवा हों भयका,
किंतु, तेरे भुजबल-दर्प-बचन को तुच्छ समझकर,
धरता हूं निज वाम चरण को तेरे शिर पर,
रोक इसे, यदि तुझ में कुछ लज्जा व शक्ति है,
अथवा, रे कायर! कुछ भी यदि समर-भक्ति है,

(पैर रखने को उठता है)

कृप और दुर्यो—गुरु पुत्र! क्षमा करो २ (रोकते हैं)

(अश्वत्थामा पैर मारता है)

कर्ण—(क्रोध से उठ कर, खड्ग खींचकर) अरे दुरात्मा, ब्राह्मणाधम, आत्मश्लाघी!

है अवध्य तू जाति से, इसी लिये, बाचाल!
अभी चरण यह काट कर दूंगा भू पर डाल।

अश्व—अरे मूर्ख, यदि मैं जाति से अवध्य हूं तो ले इसे छोड़ता हूं (यज्ञोपवीत तोड़ कर, क्रोध से)

अर्जुन की वह सुदृढ़ प्रतिज्ञा,
मिथ्या कर दूंगा मैं आज,
ले ले शस्त्र बची है तुझ में,
रे कायर! यदि कुछ भी लाज।

(दोनों तलवार खींच कर एक दूसरे को मारना चाहते हैं। कृप और दुर्योधन रोकते हैं)

दुर्यो—आचार्यपुत्र, बस बस शस्त्र न चलाइये।

कृप—वत्स कर्ण, बस शस्त्र न चलाओ।

अश्व—मामा, इसे क्यों रोकते हो, इस नीच को पिता की बुराई करने का पुरस्कार तो ले लेने दो।

कर्ण—राजन् मुझे न रोकिये

बलवान यदि निज शत्रु नीच व ढीठ को मारे नहीं—
कर क्रोध उस दुर्बुद्धि का सब गर्व संहारे नहीं—
तो, उस का अवज्ञापात्र, कायर, मंद, अत्रासित वही,
अपनी बड़ाई गर्व से करता सदा है सब कहीं।

अश्व—राजन्, छोड़दीजिये, इसे छोड़ दीजिये, इसकी मौत आगयी है, भला आप क्यों इसे पकड़ते हैं? या तो स्नेह के कारण और या अपना काम निकालने के लिये आप मेरे पिता की बुराई करने वाले इस दुरात्मा को मुझ से बचाया चाहते हैं-यह दोनों ही बातें वृथा हैं-देखिये,

यह पाप-पुंज महान,
हैं आप सद्गुण–वान,
यह सूत-कुल-संताप,
शशि-वंश-नन्दन आप,
फिर आप का है मित्र
किस भांति यह कुचरित्र?
अर्जुन का संहार
कर सकेगा न कभी यह,
किंतु मरेगा निश्चय
मेरे हाथ अभी यह,
छोड़ दीजिये इसे भूप!
निज व्यथा हरूं मैं,
कर्णार्जुन से रहित
अभी यह धरा करूं मैं।
(मारना चाहता है)

कर्ण—(तलवार उठाकर) अरे बकवादी, ब्राह्मणाधम! अब नहीं बचेगा–राजन् छोड़िये २, बस अब मुझे न रोकिये–(मारना चाहता है; दुर्योधन और कृप दोनों को रोकते हैं)

दुर्यो—कर्ण! गुरुपुत्र अश्वत्थामा! आज तुम दोनों को क्या होगया है?

कृप—वत्स, किसी का क्रोध किसी पर उतारते हो! देखो तो, राजा की सेना में तुमारी दोनों की फूट देखकर शत्रु क्या कहेंगे? कुछ तो सोचो!

अश्व—मामा, आप इस बकवादी रथकार-कुल-कलंक के अभिमान की मरम्मत मुझे क्यों नहीं कर देने देते हैं ?

कृप—वत्स, अपनी ही सेना के प्रधान वीरों से लड़कर शत्रु का बल बढ़ाने का यह समय नहीं है, क्योंकि जितनी ही कौरव सेना में फूट होगी उतनाही पांडवों का बल बढ़ेगा।

अश्व—मामा, यदि यही बात है तो

जब तक नहीं यह कर्ण रण में सदा को सो जायगा,
जब तक नहीं यह क्षुद्र दीपक सदा को हो जायगा*,
जब तक न यह रण-पोत डूबेगा रुधिरमय-भंवर में,
तब तक न जाऊंगा कभी मैं अस्त्र लेकर समर में,
जब श्रीम अर्जुन भीम भयप्रद प्रबल शस्त्र चलायंगे,
देखें भला ये सूतजी किस काम में तब आयंगे,
आपत्ति-हंस सुसैन्य-सर से मित्र-मुक्ता को निकाल,
विश्वासघाती कर्ण का जग को दिखादेगा हवाल।

(यों कह कर खड्ग फेंक देता है)

कर्ण—(हंसकर) धन्य है, मनुष्य को आंख मीच कर वही करना चाहिये जो उसके पुराने आदमी करते रहे हों-देखो न ? पिता की देखा देखी पुत्र ने भी आयुध त्याग दिये।

अश्व—अरे तू किस पर गर्व करता है ? तेरे तो आयुध निष्फल होने के कारण सदा से छूटे हुए से ही हैं।

---

* हो जायगा=बुझ जायगा।

कर्ण—हुं:, जब तक हूं कटि-बद्ध मैं, करने को संग्राम,
किसी दूसरे का भला, तब तक है क्या काम?

आयुध अन्य किसी के रण में
कर न सकें जो काम कभी,
कर दिखलाते मेरे आयुध
वैसे दुष्कर कर्म सभी,
दिव्य-प्रभा-प्रज्वलित प्रबल मम
अस्त्र कर सकेंगे कुछ जो न,
उसे सिद्ध करने के भुवि में
हो सकते हैं आयुध कौन?

(नेपथ्य में बड़ा शब्द हुआ)

सब—(सुनते हुए) यह कैसा शब्द हुआ?

(प्रवेश घबराये हुए विनयंधर का)

विनयं—महाराज २ हाय, मरे २;

दुर्यो—क्या बकता है? क्या बात है?

विनयं—महाराज, क्या कहूं भीम (सांस लेता है)

दुर्यो—जल्दी कह २

विनयं—भीमसेन ने कहा कि...(सांस लेकर) हाय, बड़ा अनर्थ हुआ।

दुर्यो—अरे मूर्ख, जल्दी कह नहीं तो अभी...

विनयं—महाराज, अपराध क्षमा करना, भीमसेन ने कहा कि (भीमकी नक़ल करता हुआ) 'अरे दुरात्मा, द्रोपदी के

केश और वस्त्र खींचने वाले, महापापी, धार्तराष्ट्राधम...' (सांस लेकर) हाय मैं तो सिड़ी होगया, मुझ से कहा नहीं जाता है, क्षमा करो महाराज, और किसी से पूछलो, क्षमा करो।

दुर्यो—अच्छा २, क्षमा किया, जल्दी कह और क्या कहा।

विनय—'आज बहुत दिनों बाद मेरे सामने आया है, अरे क्षुद्र पशु, देखूं किधर बचकर जाता है,' और कहा कि (सांस लेकर) महाराज, क्षमा करना, मैं ऐसी बातें कभी आपके सन्मुख नहीं कहता परन्तु क्या करूं राजभक्ति कहलाती है...और कहा कि 'अरे कर्ण, सौवल, दुर्योधन आदि पांडवों से बैर करने वालो, बड़े भारी धनुर्धारियो और स्वाभिमानियों के पड़-दादाओ! सुनो-

दुर्यो—अच्छा सुनते हैं जल्दी कह २

विन— गुरु-जन-सभा के बीच जो निर्लज्ज, नर-पशु, नीच,
करता रहा अपमान कृष्णा का बसन-कच खींच,
जो नित्य मम क्रोधाग्निको कटु-बचन-आहुति डाल,
करता रहा प्रज्वलित, अब यह वही क्षुद्र शृगाल,
है आगया भुज-पाश में, कर कौरवो! संग्राम,
आओ बचाओ इसे तुम सब हे प्रबल-बल-धाम,
क्षण में अभी यह भीम तो कर निज प्रतिज्ञा पूर्ण,
उर-रक्त इसका पान कर, इसका करेगा चूर्ण।

सब—(बड़े आश्चर्य से) अरे!

अश्व—अंगराज, सेनापति, परशुराम के शिष्य, गुरु द्रोण के हंसी करने वाले, अपने भुजबल से सकल लोक की रक्षा करने वाले, वीर, धीर, गंभीर, पराक्रम-सागर !

जब तक हो कटिवद्ध तुम, करने को संग्राम,
किसी दूसरे का भला, तब तक है क्या काम ?

अजी श्रीमान् सेनापति जी, कृपाकर झट पट जाइये और अपनी समर-चतुराई दिखलाकर दुःशासन को भीमसेन से छुड़ाइये ।

कर्ण—आः मेरे जीते जी भीम का क्या बूता है जो युवराज की परछाई तक से भी हाथ लगा जाय—युवराज दुःशासन डरना मत मैं आगया हूं—(बाहर गया)

कृप—राजन् कौरवनाथ ! भीष्म और द्रोण से रहित कौरव-सेना-समुद्र को मथते हुए भीम और अर्जुन कर्ण या और किसी से नहीं निवारण किये जासकते हैं, इस लिये आप स्वयं ही जाकर अपने भाई को बचाने का प्रयत्न कीजिये ।

दुर्यो—आः मेरे जीते जी भीम या और किसी की क्या सामर्थ्य है जो वत्स दुःशासन की छाया तो छूजाय; विनयंधर ! जा रथ लेआ, वत्स, डरना मत आता हूं ।

(विनयंधर और दुर्योधन गये)

(नेपथ्य में कल २ शब्द)

अश्व—(एक ओर देखकर) मामा, हा धिक्कार है, कहीं भाई भीमसेन की प्रतिज्ञा भंग न होजाय· इस भय से

अर्जुन कर्ण और दुर्योधन दोनों को बाणों से ढक देगा-हाकष्ट, दुःशासन का रक्त भीम अवश्य पियेगा-ऐसा दीखता है-युवराज की यह विपत्ति मैं नहीं देख सकता हूं-अपनी प्रतिज्ञा भंग चाहे भले ही करूं-मामा! शस्त्र! शस्त्र! दुःशासन की विपत्ति मैं कैसे चुपचाप देखूं?

(खड्ग लेना चाहता है)

कृप—वत्स, यह सब सत्य है परन्तु तुमको मिथ्या पथ पर कभी न जाना चाहिये, तुम महात्मा द्रोणाचार्य के पुत्र हो और पहिले कहीं भी तुमने सत्य बचन का उल्लंघन नहीं किया, इस लिये मेरी सम्मति में तो अबभी न करना चाहिये-आगे ईश्वर सब कुशल करेगा—

अश्व—हाकष्ट, अब तो निस्सन्देह भीम ने दुःशासन का रक्त पिया। हा

दुःशासन का रक्त-पान हो, खड़ा रहूं मैं?
कुछ न करूं! चुपचाप धरा से जड़ा रहूं मैं?

(पैर देमारना)

हाय आज क्या दुर्योधन का पक्षपात कर,
दुःशासन की भी न सकूंगा मैं रक्षा कर?

मामा! क्रोध के आवेश में कर्ण से झगड़ा करके मैं नें अच्छा नहीं किया—तो अब आपही झटपट जाइये और दुर्योधन की सहायता कर उस बेचारे दुःशासन को भीम से बचाइये।

कृप—मैं अभी उसको छुड़ाने जाता हूं, तुम भी अब शिविर मे जाओ। (दोनों गये)

एक्ट ४

सीन-१

(स्थान-रणभूमि के पास)

(प्रवेश एक सिपाही का)

सिपाही-ओः होः कितना भयंकर संग्राम आज हुआ है-ऐसे अवसर पर बचकर भागने में भी बड़ी अक़ल चाहिये-अजी यहां भागे तो क्या हुआ किसी ने देखा किसी ने नहीं देखा, घर जाकर तो तीसमारख़ां ही कहलायंगे। (सोच कर) किया क्या जाय, मनुष्य को तो प्राण ही सब से प्यारे हैं-इन प्राणों ही के लिये मनुष्य तरह २ के स्वांग रचता है और सदा यही चाहता रहता है कि कुछ दिन और जियूं-सच है-मैं ने भी यही सोचा कि जो कहीं आज भागकर बच जाऊंगा तब तो और भी अकसर इसी तरह भागने का मौक़ा पाऊंगा, और जो घमंड में आकर आज ही मर जाऊंगा तो फिर सदा के लिये यमराज के घर जाऊंगा-अजी, और मेरे यहां तो दो भैंसें हैं भला उन की ख़बरदारी कौन करेगा? और उस नाई वाले पर मेरे ब्याज के १०) चाहियें उनको क्या मैं योंही छोड़ दूंगा? अच्छे रहे; और मनुष्य को तो

है जान से प्यारा न कुछ,

बाहर रहे या घर रहे,

और, यह तो समर की अग्नि है,
जो चाहे जलकर मर रहे
निज प्राण-पण रणद्यूत में,
जो व्यर्थ हैं यों हारते,
हम सरीखे गुणवान उनको,
हैं सदा धिक्कारते।

(दूसरा सिपाही भागा हुआ आया)

दूसरा-अरे कौन है ?

पहिला-(डरकर और टोपी आदि पृथ्वी पर फेंकता हुआ लोटकर) अरे मरा रे मरा ... हाय...अरे बचाना भाई अरे....

दूसरा-अरे कौन है ? क्यों रोता है।

पहिला-(दुःखसे) भाई...मरगया मैं तो...हाय...अरे ईश्वर...

दूसरा-क्यों क्या बात है कुछ कह तो सही।

पहिला-मेरे पेट पर से गाड़ी निकल गयी।

दूसरा-अरे निकल गयी तो अब उठ खड़ा हो, गाड़ी तो निकल गयी अब क्यों रोता है ? पहिले ही से होशियार रहता तो गाड़ी क्यों निकल जाती ? और, गाड़ी निकल गयी तो क्या हुआ, चल ख़ैर गाड़ी से ही बीती, तेरी जान तो नहीं निकल गयी ? देखतो, मैं अपने प्राण बचाकर कैसा साफ़ रणभूमि से निकल भागा हूं ?

पहिला-अरे भाई, दो बरस हुए तब मैं भी बड़ा बहादुर था और कभी नहीं भागता था, पर अब तो मुझे अपनी

दो भैयों का इतना माया मोह हो गया है कि मैं भी वहीं से अपने प्राण बचाकर भागा हूं।

दूसरा-प्राण ऐसे ही प्यारे होते हैं, देखो न, प्राण बचाने के लिये वैद्य और चिकित्सक लोग नित्य नये २ आविष्कार करते हैं परन्तु तो भी प्राण नहीं बचते और लड़ाई में प्राण बचाना, जहां कि मृत्यु प्रत्यक्ष मुंह बाये खड़ी रहती है, बस साक्षात् यमराज की आंखों में से काजल चुराना है, ऐसा करने की बहादुरी बिरलों ही में होती है। प्राण दे देना तो सहज है पर उनकी रक्षा करना बड़ा कठिन है, पर यह तो बतला कि तू लोट क्यों गया ?

पहिला-(खड़ा होकर) अरे यार, मैं समझा कि न जानें तू कौन है, किसकी ओर का है कहीं मुझे मार न डाले, इस डर से अपने प्राण बचाने के लिये लोट गया और नखरे करके दीनता दिखाने लगा, क्यों कि झूंठी दीनता दिखाने से आज कल दर्शक के हृदय में दया का जल्दी संचार होता है-सच्ची दीनता की ओर कोई आंख उठाकर भी नहीं देखता- बस जहां ज़रा ईश्वर का नाम लेकर हाय २ मचाई और बस....

दूसरा-तूने सच कहा। पर क्यों भाई रण में से तू किस समय भागा था ?

पहिला-मैं उस समय बहादुरी के साथ भागा था जिस समय कृपाचार्यजी ने कहा था कि 'हे कौरव पक्ष के रणविद्या-विशारद वीर राजा लोगो! तुमने दुर्योधन के पीछे इस

लड़ाई के जुए में अपने प्राणों का दांव लगा दिया है-परन्तु देखो तो, दुःशासन के रुधिर पान से मदमत्त इस भयंकर भेष वाले भीमसेन को देखकर कौरवों की तमाम सेना भय-त्रस्त हो शस्त्र छोड़ कर भागी जारही है, इसे तो रोको !'

दूसरा-ठीक है ! और उसके पश्चात् ही फिर क्या हुआ कि कृपाचार्य इसी भांति सेना का उत्साह बढ़ाते हुए वहां आगये जहां कर्ण अर्जुन से लड़ रहाथा—सुनते हैं कि वहां इतनी जीव हिंसा हुई थी कि पृथ्वी ऊंची नीची हो गयी थी और कर्ण के घूमते हुए रथ की घंटियां बड़ा मधुर शब्द करती थीं ।

पहिला-हमारी भैंसों के घंटालों से तो क्या मधुर शब्द करती होंगी ?

(नेपथ्य में) ठहरतो जाओ २ अरे कायरो, बताओ कहां है दुर्योधन ?

दूसरा—(देखकर) अरे ! यह दुःशासन के रुधिर से नहाया हुआ भीमसेन यहीं आया, आओ झटपट छिपें यहीं-

(दोनों का छिपना)

(प्रवेश भीम का)

भीम—अरे मुझे देखकर भय से अस्त्र शस्त्र छोड़कर भागने वाले कौरव तथा पांडव सेना के योधाओ ! मत डरो २ मेरा नाम भीमसेन है- दुःशासन को मारकर और अपने नख से उसकी छाती फाड़कर मैंने उसका रुधिर रूप मद्यपान

करके; और नृपसभा में कृष्णा के अपमान का बदला लेकर अपनी एक प्रतिज्ञा पूरी करली है, अब बस एक और बची है—देखो मेरा ही नाम भीम सेन है, और सुन लो कि—

आज चुकाया है बदला कृष्णापमान का,
फाड़ सका हूं आज हृदय उस साभिमान का,
मान-धनी, बल-गर्व-प्रचुर, अति श्रेष्ठ धनुर्धर,
शल्य, कर्ण, दुर्योधन आदिक सभी वीरवर,
देखा किये खड़े दुःशासन का बध रणमें,
रुधिर पान कर पूर्ण कर रहा था जब प्रण मैं,
किंतु न कोई भी उसके सहाय को आया,
निज पापों का फल पहिले पापी ने पाया,
जिनके पीछे किये कर्म उसने थे ये सब,
चुपके देखा किये दुर्दशा उसकी वे सब,
हैं अनेक यों रक्षा का दम भरने वाले,
पर विरले ही हैं सहायता करने वाले,
इसी भांति पापी सदुःख मारे जावेंगे,
कोई न देगा साथ, किये का फल पावेंगे।

बस अब दुर्योधन की जंघा तोड़नी रहगयी है—यह भी लीला अब शीघ्र ही होगी। (गया)

(दोनों सिपाहियों का डरसे झांकते हुए थोड़ी देर बाद निकलना)

पहिला—(झांकता हुआ) ओरे, (इधर उधर देखकर) मुझे अब भी डर ही लग रहा है, और मेरा कलेजा अब भी ऐसा धक् २ कर रहा है कि मानों मैं ही दुःशासन हूं।

दूसरा–सच है, बुद्धिमान् समदर्शी को दूसरे का दुःख अपना ही सा लगता है, मेरा भी हृदय ऐसाही धुकड़ पुकड़ कर रहा है।

पहिला–सच है, क्या करें ? जिनका हृदय दया-मय है उनका इस संसार में कहीं ठिकाना नहीं है, भला जहां ज़रा२ सी भूमि के पीछे लाखों मनुष्यों का खून खच्चर होता है, जहां स्वार्थ के आगे ईश्वर को भी तुच्छ समझते हैं, वहां हमारा और आप सरीखे योगभ्रष्ट महात्माओं का क्या काम ? अजी और हम लोगों को तो इस बात की बड़ी चिन्ता है कि मेरे यहां दो भैंसें बंधी हैं, भला बताओ तो उनका पालन पोषण कौन करेगा ? और भाई सच तो यह है कि मैं तो जीव हिंसा से इतना डरता हूं और उससे इतनी घृणा करता हूं कि अगर राजा मेरे कहने पर चलें तो सब के अस्त्र शस्त्र अभी छिनवादूं और एक कानून बनवादूं कि जिससे कोई भी मनुष्य अपने पास आयुध न रख सके, क्यौंकि 'न रहेगा बांस, न बजेगी बांसरी' जब तनिक भी जीव हिंसा का सामान नहीं रहेगा तब जीव हिंसा क्यौंकर हो सकेगी ?

दूसरा–कहीं तो आपने सब बातें सच, मगर (एक ओर देखकर) यह तो देखिये सामने से कौन भागा आता है ? अरे, फ़िर छिपना पड़ा।

(दोनों का एक २ ओर छिपना)

(विनयंधर का प्रवेश)

विनयं—(घबराकर, दुःखसे) अरे, यहां अभी कुछ मनुष्य दीखे थे, न जाने कहां चले गये, अथवा मुझे ही भ्रम हो गया है...हाय...अरे कोई बताओ तो राजा दुर्योधन कहां है ? (दुःख से) सब जगह ढूंढ़ आया, कोई नहीं बताता...अरे कोई बताओ कौरवेश्वर का पता ?....उफ्...मैं बड़ा मूर्ख हूं, सदा राजा की हंसी किया करता था...पर अपनी चीज़ चाहे कितनी ही बुरी क्यों न हो मनुष्य को उससे मोह होही जाता है... राजाजी के यहां मैं इतने दिन रहा और इतना उनका नमक खाया फिर यदि उनकी विपत्ति से मेरा हृदय दुःख पूरित हो तो क्या आश्चर्य है ? ...हा...अरे कोई बताओ राजा दुर्योधन को...जब तक मनुष्य जीवित रहता है तब तक उसके कुटुंबी उसके विरह की कल्पना भी नहीं करते हैं और यदि करते भी हैं तो सोच लेते हैं कि अमुक मनुष्य बुरा है यदि वह मर भी गया तो हमें दुःख नहीं होगा, किंतु जब वह सचमुच इस संसार को छोड़ता है तब तो न जानें कब कबकी पुरानी स्मृतियां उनके हृदय में बर्छियां हो-कर लगती हैं...अथवा जब अपने जन पर विपत्ति आती है तो चाहे वह अपना शत्रु ही क्यों न होगया हो, उसके संबंधियों के हृदय में कुछ न कुछ दया का संचार हो ही जाता है। हे कुरुनाथ ! इस समय विपत्ति आपके लिये चारों ओर से मुंह बाती हुई जीभ लप

लपाती हुई आरही है...हाय नाथ यह आपकी व्यथा इस आपके पुराने टुकड़खोर विनयंधर से देखी नहीं जायगी—(कुछ संभलकर) अरे मैं क्या बक गया? बुढ़ापे ने मेरी बुद्धि पर पानी फेर दिया? क्या बुढ़ापे में माया मोह कुछ अधिक हो ही जाता है? ...यहां किस से पूछूं...अरे भाई कोई बताओ कि महाराज कौरव-कुल-दीपक दुर्योधनजी कहां विराजते हैं? (चारों ओर देखकर) इस संसार-समर में मनुष्य अपने २ कर्मों का फल पारहे हैं; किस से पूछूं? (ढूंढ़कर, और छिपे हुए एक सिपाही को पकड़कर) हा दैव, ग्यारह अक्षौहिणी सेना के संचालक, सौ भाइयों में सब से बड़े, कि जिन के सहायक कृप और कर्ण सरीखे महा पराक्रमी हैं, उन महाराज दुर्योधन को मैं ढूंढ़ता फिरता हूं और कोई नहीं बताता कि वे कहां हैं!

सिपाही—अजी मुझे छोड़दो मुझे नहीं मालूम—

विनयं—अरे भाई मैं क्या तुझे पकड़ता हूं? कोई किसी को नहीं पकड़ता है। इस संसार में तो बस केवल स्वार्थ मनुष्य को पकड़ता है और मनुष्य स्वार्थ को; अब और किस से पूछूं (दूसरे को ढूंढ़कर पकड़ता है)

सिपाही—(रोकैर) हाय...अजी मुझे छोड़दो; न जाने महाराज.... कहां हैं। मैं नहीं जानता।

विनय–अरे भाई तू डरता क्यों है? जहां भय का स्थान नहीं है वहां भी तू या तो अज्ञान से और या पाप-कलुषित होने के कारण भय करता है। जाने दे, तुझे नहीं मालूम तो। हाय अब और किस से पूछूं। (सोचकर) ठीक है, कर्मों हीं का फल प्रबल है इस में किसी का दोष नहीं है–देखो न, बिदुर के नीति बचन पर ध्यान न देना और उनका तिरस्कार करना तो बीज हुआ, और पितामह के सदुपदेशों को न मानना अंकुर समझिये, और दुष्ट शकुनि का प्रोत्साहन हुआ जिस की जड़; जतुगृह–दाह, कपट-प्रचुर द्यूत और विष-मिश्रित अन्न यही समझनी चाहियें उसकी शाखें, और बहुत दिनों से बैर बढ़ाना ही हुआ जिसका थामला, द्रोपदी के कच और केश खींचना ही जिस का कुसुम हुआ, उसी कुकर्मतरु का यह अब फल निकला है।

दो. सि.–आपने सब सच कहा, परन्तु महाराज दुर्योधन यहा नहीं हैं, उन्हें और कहीं खोजिये, हम भी खोजने घर जाते हैं, मिले तो पत्रद्वारा सूचित करेंगे–(दोनों का खिसकना)

विन—अब और कहां ढूंढूं, चलकर वहीं लड़ाई में तलाश करूं। (गया)

सीन २

स्थान— रण भूमि के पास पेड़ों की छाया में एक जगह

(प्रवेश बेहोश दुर्योधन को लिये सारथी का)

सारथी—(दुःख से) सुनता हूं कि धृतराष्ट्र के पुत्रवन का दहन करने वाला, प्रवल अग्नि के समान, भीमसेन पास ही है। (दुर्योधन को देखकर और लिटाकर)महाराज को अभी होश नहीं हुआ है, मुझे भय है कि दुःशासन की तरह कहीं इनके साथ भी उत्पात न करे। कहां ले जाऊं ? अहा, यह शीतल और मन्द पवन पास के उस तालाब में खिले हुए कमलों की सुगंधि कैसी साथ लाता है जैसे कोई पुण्यात्मा अपने पुण्यकर्मों के फल को लेकर स्वर्ग जा रहा हो अथवा जैसे नय सिद्धि को साथ लिये फिरता हो, अथवा यों कहे कि यह संगत का फल है। यह रम्य स्थान रण में थके हुए वा बेहोश वीरों के उपयुक्त ही प्रकृति ने बनाया है। यह चन्दन और कमल की सुगन्ध वाली शीतल वायु अपने आप ही महाराज को चैतन्य प्रदान करदेगी, पंखा झलने और जल छिड़कने का काम यह अपने आप ही करलेगी। (इधर उधर देखकर) अरे कोई है क्या ? (फिर इधर उधर देखकर) कोई भी अनुचर यहां नहीं है, मालूम होता है कि भीमसेन से और महाराज की इस दशा से डरकर सब शिविरों में चले गये ; कोई विरला ही जन विपत्ति में साथ देता है। हा कष्ट !

दें सिन्धु-राज को अभय-दान, आचार्य
फिर भी पूरा कर सके न रक्षा-कार्य,
दुःशासन की दुर्दशा हुई जो आज
उसको भी देखा की कुरुवीर-समाज,
हा! यों ही कर लेते हैं रिपु प्रण पूर्ण,
दुर्दैव-दंड से होता कुरुकुल चूर्ण।

(दुर्योधन को देखकर) क्या अब भी महाराज नहीं जागे?

(सांस लेता हुआ) हाय,

मद—मत्त गज ने तोड़ डाले बिपिन के तरुवर सभी,
बस बच रहे हैं अब अकेले शाल-तरु से आप ही,
खो प्राण सकल कुमार रण में सदा को हैं सोरहे
हैं आप भी दुर्दैव के अब लक्ष्य हा हा हो रहे।

(फिर झुककर देखकर) कैसे जगाऊं?

(भैरवी)

उठिये कुरु-कुल-भानु होरही मलिन कमलिनी सेन,
हुए बीर-पंकज-गण नतमुख अलिमन मुग्ध करें न,
भ्रमरी-आश निराश हो चुकी निज हिय धैर्य धरे न,
विगत हुआ उत्साह-हंस मति-गति से अब विचरे न,
उठिये०—

हा कुटिल दैव! भरत-कुल-विमुख!!

क्या अक्षत ही भीम की हुई प्रतिज्ञा पूर्ण?
क्या जंघा कुरुराज की होगी निश्चय चूर्ण?

दुर्यो—(हौले २ होश में आकर उठता हुआ) आः, मुझ दुर्योधन के जीते जी वृकोदर भीमसेन की क्या सामर्थ्य है जो प्रणको पूरा कर सके ? वत्स दुःशासन डरना मत २ मैं आ पहुंचा हूं, सूत ! मुझे कहां ले आया ? झटपट रथ वहीं हांक ले चल जहां दुःशासन है।

सूत—आयुष्मन्, ठहरिये थकावट के कारण आप के घोड़े रथ न लेजा सकेंगे (मुंह फेर कर) और मैं भी....

दुर्यो—(खड़ा होकर, गर्वसे) रथके पीछे देर करने से क्या लाभ ?

सूत—(करुणामयी दृष्टि से देखता हुआ) आयुष्मन्, क्षमा कीजिये।

दुर्यो—अरे सूत धिक्कार है ! रथ से क्या होता है ? शत्रु संघट्ठन का मर्दन करने वाला मैं दुर्योधन तो केवल एक गदा ही लेकर रणभूमि में घुस पडूंगा।

सूत—आयुष्मन्, इस में क्या संदेह है।

दुर्यो—तो फिर ऐसा क्यों कहता है ? देख—

दुःशासन को भीम हमारे सन्मुख मारे ?
उसे क्षुद्र को क्यों निज बल से हम न सँहारें ?
इस सुकर्म से, मूर्ख ! रोकता है तू मुझको !
निश्चय लज्जा, क्रोध, न करुणा है कुछ तुझको।

सूत—(करुणा से पैरों पर गिरता हुआ) मैं यह कहता हूं कि हे आयुष्मन्, दुरात्मा अधम भीमसेन अपनी प्रतिज्ञा पूरी करके लौट चुका होगा।

दुर्यो—(सहसा भूमि पर गिरता हुआ) हा प्रिय दुःशासन....
अरे...मेरी ही आज्ञा से...पांडवों को अपना....शत्रु
बनाने वाले....हा...महा विक्रमी...हा...रिपु-कुल-गज-
घटा-मृगेन्द्र...हा...युवराज...कहां है...मुझे उत्तर तो
दे...(लम्बी सांस लेता हुआ मूर्छित होगया)

(होश में आकर सांस लेता हुआ, बैठकर)

हा वत्स,

उपभोग सुख से युक्त लालन मैं न तेरा कर सका
था मम कनिष्ठ, परन्तु पालन मैं न तेरा कर सका···
मम हेतु ही आपत्ति-पर्वत शीश पर तूने लिया
हा हंत ! रक्षण शत्रु से तो भी नहीं मैंने किया....

(फिर गिर पड़ा)

सूत—आयुष्मन्, धैर्य धरो २

दुर्यो—(फिर बैठकर) अरे सूत धिक्कार है तुझको, तूने
यह क्या किया ?

प्रिय आज्ञाकारी पालनीय युवराज...
उसके प्रिय प्राणों की देकर बलि आज,
क्यों बचालिये तूने मेरे ये प्राण ?
क्या दे स्व-प्राण करता कोई तनु-त्राण ?

सूत—महाराज, मर्म-भेदी इन तोमर शक्ति प्रास आदि की
वर्षा के कारण आप चेतना रहित हो गये थे, इसी
कारण मैं रथ को इधर ले आया-

दुर्यो—सूत, तूने ठीक नहीं किया—

दुःशासन-रुधिरार्द्र-धरा में धूर्त वृकोदर-
अथवा मैं ही- भीषण चोट गदा की खाकर
लोट गया क्यों नहीं ? हटाकर तूने क्यौं रथ-
मूर्ख ! कर दिया सुगम शत्रु-प्रण-पूर्ति- कठिन-पथ ?

(लम्बी सांस लेकर आकाश की ओर देखता हुआ)

अरे दुष्ट दैव, दया रहित, भरत-कुल-विमुख !
तनु चाहें जैसे पड़े विसर्जन करना,
पर मुझे नहीं स्वीकार भीम से मरना ।

सूत—ईश्वर कुशल करे, महाराज ! आप क्या कहते हैं ?

दुर्यो—(नीची गरदन करके, दुःख से) हाय,
हो चुके सभी निश्शेष सहोदर भाई
अब क्या करनी है मुझे विजय प्रभुताई ?

(प्रवेश घबराये हुए बिनयंधर का)

बिनय—श्री महाराज, आपकी जय हो २

सूत—(देखकर) आयुष्मन् ! लड़ाई से विनयंधर आया ।

दुर्यो—(देखकर) अरे विनयंधर ! अंगराज कर्ण की कुशल तो है ?

विनयं—देव, केवल शरीर की तो कुशल है ही ।

दुर्यो—(घबराकर) विनयंधर ! क्या अर्जुन ने इनके घोड़ों और सारथी को मारडाला और रथ तोड़डाला ?

बिनयं—देव, केवल रथ ही नहीं मनोरथ भी तोड़डाला ।

दुर्यो—(गुस्से से) अरे मूर्ख, स्पष्ट क्यौं नहीं बतलाता कि क्या हुआ ।

विनयं—जो श्री महाराजकी आज्ञा। क्षमा करियेगा। आपके दर्शन मिलने से ही मेरी जान में जान आई है। महाराज सुनिये कि आज कुमार दुःशासन का बध...(रुक गया और मुंह ढक लिया)

दुर्यो—(छाती पर हाथ रखकर, अपने आंसू पोंछता हुआ) तू कह, हम सुन चुके हैं।

विनयं—तो सुनिये महाराज, कि कुमार दुःशासन का बध देखकर क्रोधोन्मत्त होकर अंगराज ने अपने भीषण धनुष और भयंकर बाणों को लेकर भीमसेन से युद्ध प्रारम्भ कर दिया।

दुर्यो—तब क्या हुआ?

विनयं—बस क्या कहूं, रोमाञ्च हो आता है, उस समय रणभूमि में ऐसा अंधकार छागया कि मानों सब कालरात्रियां लड़ाई देखने को आज ही उपस्थित होगयी हों, प्रलयकाल सा अंधकार था।

दुर्यो—अच्छा?

विनयं—महाराज, धनुष की टंकारों का शब्द ऐसा ज्ञात होता था मानों प्रलयकालीन मेंघ गरज रहे हों। इस भांति कहां तक कहूं बस बड़ा ही भीषण संग्राम हुआ।

दुर्यो—किस तरह हुआ?

विनयं—तब, महाराज, कहीं भीमसेन हार न जायं इस शंका से वहां वासुदेव से रथ हंकवाते, घोरं शंखध्वनि करते हुऐ अर्जुन आगये।

दुर्यो—तब फिर?

विनयं-तब महाराज, भीम और अर्जुन से अकेले युद्ध करते हुऐ देखकर अपने पिता की सहायता के लिये कुंमार वृषसेन वहां झट से आगया।

दुर्यो—(अकचकाकर) फिर क्या हुआ?

विनयं-महाराज, तब उस ने आते ही भांति २ के महा भयंकर बाणों सेअर्जुन को ढक दिया कि जैसे कोई पेड़ फूलों से लदा हुआ हो।

दुर्यो—(हर्ष से) तब फिर?

विनयं-अब अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करते हुए अर्जुन ने मुस्किराकर कहा कि, 'अरे वृषसेन! तेरा बाप तो मेरे सन्मुख ठहर ही नहीं सकता तू यहां क्या चपलता दिखाता है, जा अपने बराबर के और कुमारों से अटक'। पिता के अपमान-सूचक ये बचन सुनकर और अत्यन्त कुपित होकर वृषसेन ने इन का उत्तर अत्यन्त तीक्ष्ण, मर्म भेदी अनगिनती बाणों से दिया।

दुर्यो—वाह, वृषसेन, वाह; हां फिर क्या हुआ?

विनयं-देव यह देखकर अर्जुन ने भी महाघोर कर्ण-कठोर टंकार कर बाणों के मारे सबों की दृष्टि बांधदी।

दुर्यो—(भय से) तब क्या हुआ?

विनयं-तब अर्जुन का यह कर्म देख कुमार वृषसेन ने भी ऐसी सफ़ाई दिखाई कि बाण लेना, रखना और चलाना कुछ भी क़िसी को नहीं दीखने लगा और

अर्जुन के ऊपर अगणित-शर-समूह इस प्रकार टूटने लगे कि जैसे मलयगिरि के चन्दनतरु पर सर्प हों।

दुर्यो— तब, तब?

विन—तब तो दोनों पक्ष के योधाओं ने आपस की लड़ाई बंद करदी और 'शावाश वृषसेन! शावाश' यों कहा—

दुर्यो—(विस्मय से) फिर क्या हुया?

विन—तब अपने पुत्र का सब धनुर्धरों से असंभव ऐसा अनोंखा करतब देख कर हर्ष, शोक, करुणा और शंका से पूरित होकर कर्ण ने आंसू भरी दृष्टि वृषसेन पर और शर-वृष्टि भीमसेन पर फेंकी।

दुर्यो—(विस्मय से) तब क्या हुआ?

विन—हे देव, तब दोनों पक्ष वालों से वृषसेन की बड़ाई सुनकर अत्यन्त क्रोधित होकर एक साथ ही उस के घोड़ों और सारथी को मारकर रथ, धनुष, और तो क्या तांत तक के पैने बाणों से अर्जुन ने टुकड़े उड़ा दिये।

दुर्यो—(भय से) तब क्या हुआ?

विन—तब रथ, धनुष, और बाण से रहित वृषसेन केवल पैंतरे बदल २ कर अपने को अर्जुन के बाणों से बचाता हुआ चक्कर देने लगा।

दुर्यो—(शंका से) तब क्या हुआ?

विन—तब, हे राजन्, अपने पुत्र को विरथ देखकर अंगराज ने भीम से लड़ना तो छोड़ दिया और अपने पुत्र की

रक्षा के लिये हज़ारों बाण अर्जुन पर छोड़ने लगे।
कुमार वृषसेन भी दूसरे रथ पर चढ़कर अर्जुन से लड़ने लगे और कहने लगे कि 'हे मेरे पिता की बुराई करने वाले! मेरे बाण तेरे शरीर के सिवाय और कहीं न गिरेंगे' और ऐसा कह कर उन्होंने भी अनगिनती बाण अर्जुन को मारे और उसे ढक दिया।

दुर्यो—अहा, धन्य है कुंवर वृषसेन को, अच्छा फिर क्या हुआ?

विन—ये बचन सुनकर अर्जुन ने उन दोनों के सब बाण तो काट डाले परन्तु एक सौने की घंटालियां लगी हुई मेघ के समान काले फर की और अत्यन्त पैनी, बहुत से रत्नों से जड़ी हुई और देखने में बड़ी सुन्दर किंतु महा भयंकर शक्ति लेकर और हँसकर वृषसेन की ओर छोड़ी कि जिसे देख कर कर्ण के हाथ से धनुषबाण, हृदय से उत्साह और आंखों से अश्रुजल छूटपड़ा और पांडव सेना में सिंहनाद और कौरव सेना में हाहाकार मच गया।

दुर्यो--(दुःख से) फिर क्या हुआ?

विन—तब कुमार वृषसेन ने छुरे के समान अत्यन्त तीक्ष्ण किंतु बड़े २ शर संधान कर के, और धनुष को कानों तक खींचकर चलादिये कि जिन से उस भयंकर शक्ति के रास्ते ही में तीन टुकड़े होगये।

दुर्यो—वाह वाह वृषसेन वाह, अच्छा फिर?

विन—तब तो दोनों ओर से 'वाह वृषसेन वाह' का शब्द सुनाई दिया कि जिस से सारी रणभूमि गूंज उठी।

दुर्यो—क्यों न हो, बालक का पराक्रम ऐसा ही है। अच्छा फिर ?

विन—तब अंगराज ने भीमसेन से कहा कि अभी हमारा तुमारा युद्ध समाप्त नहीं हुआ है, परन्तु थोड़ी देर ठहर जाओ और अर्जुन-वृषसेन का यह देखने लायक संग्राम देखलो', फिर थोड़ी देर के लिये दोनों जने बैर छोड़कर युद्ध देखने लगे ।

दुर्यो—भला ! फिर ?

विन—तब शक्ति को खंडित हुई देख अर्जुन ने क्रोध से कहा कि 'हे दुर्योधन वाले' (इतना कहकर चुप होजाना)

दुर्यो—विनयंधर, कहदे यह तो शत्रु का बचन है ।

विन—बहुत अच्छा महाराज सुनिये, "अरे दुर्योधन प्रमुख कौरव सेना के नायको और हे अविनय नंदी के कर्ण-धार कर्ण! तुम सब ने मेरे पीछे अकेले अभिमन्यु को घेर कर मारडाला था, परन्तु तुम सब के सामने ही मैं कुमार वृषसेन को यमलोक भेजता हूं, बचा सकते हो तो बचाओ !" यों कह कर गांडीव धनुष चढ़ाया, तब कर्ण ने भी अपना कालपृष्ट नामक धनुष-चढ़ाया ।

दुर्यो—फिर क्या हुआ ?

विन—महाराज, तब तो अर्जुन ने दोनों की ओर बाणों की दो नदियां बहाई और भीमसेन को लड़ने से रोक दिया। इन दोनों ने भी खूब प्रयत्न से लड़ना प्रारंभ किया ।

दुर्यो—तब फिर ?

विन—फिर महाराज, अर्जुन ने ऐसा कौशल दिखाया कि बाण लेना, रखना, और चलाना यह कुछ भी न दीख पड़ा और थोड़ी ही देर में उसने इतने बाण चलाये कि न आकाश, न कर्ण, न रथ, न धरती, न कुमार न ध्वजा, न सेना, न सारथी, न घोड़े, न वीर लोग कुछ भी नहीं दिखाई पड़ने लगा।

दुर्यो—(विस्मय से) तब क्या हुआ ?

विन—तब बहुत थोड़ी देर बाद ही पांडवों की सेना से आनन्द-ध्वनि हुई और कौरव सेना से "हाय, कुमार वृषसेन मारा गया" ये शब्द निकले।

दुर्यो—(आंसू भरकर, क्रोध से) तब क्या हुआ ?

विन—महाराज, तब लोगों ने देखा कि कुमार का सारथी और घोड़े मरे पड़े हैं, रथ, छत्र, चाप, चामर और ध्वजा टूटी पड़ी हैं और कुमार वृषसेन खुद एक बाण से बिधे सदा को सोये पड़े हैं।

दुर्यो—(आंसू भरकर) हाय, बड़ा अनर्थ हुआ, हा कुमार वृषसेन, हा मेरे आज्ञाकारी, तुम भी मेरे पीछे मारे गये! हा गदायुद्धप्रिय, शूरता के समुद्र, हा प्रिय-दर्शन, हा गुरुवत्सल, मुझे उत्तर तो दे—हाय, कर्ण ने...

विशालाक्ष युत मुख-मंडल नव-उदित कलाधर,
नव यौवन से कांतिमान प्रिय शोभा-सागर,
तुझे मरण के समय विलोका होगा कैसे ?
निज प्राणों को, हा हा, रोका होगा कैसे ?

सूत—महाराज, अब अधिक दुःख न करिये।

दुर्यो—सूत, पुण्यवान ही दुख का अनुभव कर सकते हैं, और हमारे तो

मारे गये प्रत्यक्ष में सब बंधु बांधव बीर,
शोकाग्नि जिनकी भस्म करती नित्य सकल शरीर,
फिर क्या व्यथा, क्या दुःख ? सबका वही एक प्रभाव,
जिसके सहन को हो चुका अभ्यस्त कठिन स्वभाव...

(बेहोश होगया)

सूत—महाराज, धीरज धरिये २ (कपड़े से हवा करता है)

दुर्यो—(होश में आकर) हाय कुमार; फिर मित्र अंगराज ने क्या किया ?

विन—महाराज, तब तो आंसू पोंछकर कर्ण ने लड़ना प्रारम्भ किया और मरने के हेतु कवच भी उतार दिया, परन्तु सब पांडवों ने उन्हें घेर लिया और उनका रथ वथ सब तोड़ डाला और उन्हें घायल भी कर दिया, ऐसी दशा में उनकी कुशल न देखकर शल्य उनके रथको बाहर निकाल कर अलग ले गये। वहां वे कर्ण को समझा रहे हैं कि इस समय भीम और अर्जुन से लड़ना ठीक नहीं। परन्तु कर्ण उनकी बात नहीं मानते हैं और अपने घाव के लहू और बाण के सिरे से यह पत्र आपको लिख कर दिया है (पत्र देता है)

दुर्यो—(लेकर पढ़ता है)

"स्वस्ति श्री महाराज, हे नृप, कुरु-कुल-कमल-रवि !
अन्त समय लखि आज, आलिंगनं प्रिय कर्ण कर,

कहता है- हे नाथ, अब न मिलेंगे हम कभी
किन्तु इसी के साथ, एक बात यह और भी:—
'इसके नहीं समान, भुवि में कोई धनुर्धर,
है यह ज्ञान-निधान, अनुज-वर्ग से अधिक प्रिय,
निश्चय यह बल-धाम, पांडु-सुतों का नाशकर
हर कर क्लेश तमाम, देगा सुख हम सबों को'
ऐसी थी तव आश, किंतु न मैं कुछ कर सका,
रोक सका न विनाश, दुःशासन का भीम से,
निज दुख का प्रतिकार, भुज-बल वा दृगनीर से,
करिये मति अनुसार, महाराज अब आपही,
किन्तु अलौकिक मान, दिया सदा जो आपने,
उसका मैं अहसान, हा पूरा न चुकासका,
इसका दुःख विशेष, होता मुझको इस समय,
इसीलिये निश्शेष, करता अपने आपको" ....

(दुःख से) हाय २ कर्ण! मेरे सौ भाई मारे जाने पर भी मुझे क्यों वाक्य-बाणों से छेदते हो-अरे सूत, ला जल्दी से मेरा रथला; बिनयंधर! जा कर्ण से कह कि आप ठहरिये, साहस न करिये मैं आता हूं; अभी हम दोनों मिलकर, पांडवों का नाश करदेंगे, सब शत्रुओं को मारकर ही मरेंगे; और देख यह कह दीजो कि हे अजित-विक्रम! मैं आपको क्या आश्वासन दूं? बस यही समझ लीजिये कि वृषसेन आप का पुत्र न था और दुःशासन मेरा छोटा भाई न था; जा जल्दी जा।

(सब गये)

सीन ३

स्थान-रण भूमि के पास

(शल्य और घायल कर्ण बैठे हैं)

शल्य—अंगराज ! मैं कहता हूं कि साहस न कीजिये, बना बनाया काम न बिगाड़िये, कवच पहिन लीजिये, और दुर्योधन अवश्य आते होंगे उनकी प्रतीक्षा कीजिये, तब पांडवों से लड़ना ।

कर्ण—(नीचा मुख किये हुए) मद्रराज ! क्या कहते हो?.... हा वृषसेन !...

शल्य—वृषसेन की याद आपको अब तक नहीं भूली है, भला जब आप इस तरह करेंगे तब दुर्योधन की क्या दशा होगी कि जिनके सौ भाई मारे जा चुके हैं, सचमुच क्षत्रिय धर्म बड़ा कठिन है, इसका निभाना बहुत ही कठिन है ।

कर्ण—क्या कहा ? क्षत्रिय धर्म बड़ा काठिन है ? (पृथ्वी पर पैर मारकर) बड़ा कठिन है ? बस चलो मैं अभी समर में चलूंगा और घायल हूं तो क्या हुआ इसी दशा में शत्रुओं का सत्यानाश करूंगा, अथवा समराग्नि में अपनी ही आहुति दे डालूंगा बस, चलो उठो ।

शल्य—अंगराज ! कवच पहिन लीजिये और सोच विचार कर काम कीजिये, इस दशा में पांडवों से लड़ना कोई हंसी खेल नहीं है, देखिये द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा की आपने आयुध त्याग देने पर कितनी निन्दा की थी

और 'ब्राह्मण २' कहकर तिरस्कार किया था, अब आप स्वयं कवच न पहिन कर ऐसा काम न कीजिये कि जिसमें लोगों को हंसने का अवसर मिले।

कर्ण--मुझे किसी की तनिक भी परवाह नहीं है, वीर को वीर-गति प्राप्त करते देख कर मूर्ख ही हंसेंगे, पर इन बातों सें क्या लाभ ? आप मुझे क्यौं डराते हैं; अरे कोई है? दूसरा रथ लाओ

(प्रवेश सारथी का)

सारथी--उपस्थित है, महाराज !

कर्ण--अच्छा चलो अर्जुन के सामने ले चलो। (गया)

शल्य--सारथी का काम तो मुझे ही करना पड़ेगा। पर 'विनाशकाले विपरीतबुद्धिः' इस कहावत का कर्ण आज एक अच्छा उदाहरण बना हुआ है। (गया)

एक्ट-५

सीन-१

(स्थान—एक पेड़ की छाया)

(संजय और विदुर बैठे हैं)

विदुर—हां क्या कहा कि रानी गांधारी ने भी बहुत समझाया। पर उसने एक की न सुनी-

संजय—अजी हां, किसी की सीख न मानी, और अपने माता पिता से भी ऐसे रूखेपन से बातें की कि वे कुछ और कही न सके, और मुझे तो चट मूर्ख बता दिया।

विदुर—क्या दुर्योधन उन से ठीक २ बोला भी नहीं?

संजय— अजी उसने किसी की बातों पर ध्यान न दिया और मुझे भी खूब फटकारा। जब राजा धृतराष्ट्र ने कहा कि 'तेरे सौ भाई और भीष्म, द्रोण आदि भी सब मारे जा चुके हैं और मेरा आधार तू अकेला ही बच रहा है- पांडवों से मेल करले' तो उत्तर दिया कि—आप वृद्ध हो गये अब बन में चले जाइये; और कहने लगा कि मेरे पक्ष के इतने राजा मारे जाचुके हैं और मेरे भाई भी मारे जा चुके हैं पर पांडव अभी पांचों भाई मौजूद हैं वे मेरे साथ क्यों मेल करेंगे? क्योंकि मेल और प्रीति तो बराबर वाले ही से निभ सकती है; जब राजा ने कहा कि मेरे कहने से युधिष्ठिर मेल कर लेगा क्योंकि वह प्रण कर चुका है कि एक भी भाई के मारे जाने पर मैं प्राण त्याग दूंगा इसलिये उसे भी अपनी जान का डर है

विदुर—राजा ने अच्छा कहा, हां तब उसने क्या कहा ?

संजय—अजी तब वह कहने लगा कि युधिष्ठिर ने तो यह प्रण कर लिया है कि एक भी भाई के मारे जाने पर प्राण त्याग दूंगा, पर मेरे तो सौ भाई मारे जा चुके हैं, मैं निर्लज्ज अभी तक जीता हूँ इस लिये या तो अपने भाइयों का बदला चुकाऊंगा या मैं भी उन्हीं के पास चला जाऊंगा। अजी उसे तो झटपट जाकर कर्ण की सहायता करने की जल्दी थी-बस इसी तरह ओछी बातें करके और भाग गया-क्योंकि सुना है कि कर्ण ने भी आज के ही युद्ध में जीवन मरण का प्रश्न हल करना विचार लिया है।

(नेपथ्य में बड़ा शब्द हुआ)

विदुर—संजय ! यह घोर शब्द काहे का है ?

(संजय का देखना और एक रथ का वेग से निकल जाना)

संजय—(उंगली से दिखाकर) देखो !

बागडोर है छुट पड़ी, इस के कर से आज,
टूट गयी है ध्वजा भी रथ का भी सब साज,
किंतु अश्व हैं जा रहे, मानों उड़ते नाग,
जिससे हैं अभ्यस्त वे उसी मार्ग से भाग,
शल्य अकेला ही, अहो, दृग से आंसू डाल,
मानों बैठा कह रहा, अंगराज़ का हाल।

(प्रवेश घबड़ाये हुए सारथी का)

सारथी—हा....मरा...(भूमि पर गिर पड़ा)

विदुर—अरे कुछ कह तो सही—

सारथी—और क्या कहूं

दृग से आंसू डाल, शल्य अकेला ही अहो
अंगराज का हाल, मानों बैठा कह रहा...,
कर्ण रहा आधार, भीष्म द्रोण जब चल बसे-
कौरव पक्ष बिसार, वह भी हा हा चलदिया!

विदुर—अच्छा संजय! चलो हमारा तुमारा काम तो समझाने का है। फिर चलकर समझावें। कुरुवन का केवल एक अंकुर अब दुर्योधन ही बच रहा है, यदि अब भी मानले तो अच्छी बात है।

(गये)

सीन २

स्थान-एक पेड़ के नीचे

(संजय और विदुर बैठे हैं, दुर्योधन बेहोश पड़ा है, नौकर खड़ा है)

संजय—राजन् धैर्य धरिये (हवा करता है) धैर्य धरिये।

दुर्यो—(चैतन्य होकर) हा...कर्ण...

कर्ण-सुखद कह बचन मुझे सुख दीजिये....
निरपराध हूं क्षमा मुझे अब कीजिये...
क्यों कर मुझे अनाथ, नाथ कुरु सेन के,
चले गये तुम निकट तनय वृषसेन के?

(बेहोश होगया)

विदुर—वत्स, अब जो हुआ सो हुआ, सोच मत करो, धैर्य धरो।

दुर्यो—(होश में आकर)

मम प्राणाधिक अंगराज मारे गये?...
क्या मृगद्वारा मृगपति संहारे गये?...
. . . .
हा धिक्! फिर भी सांस चल रहा है यह मेरा!
कैसे रक्खूं धैर्य? हुआ सब ओर अंधेरा...

संजय—राजन्—

दुर्यो—और

प्रिय दुःशासन सहित सब अनुज-वर्ग का नाश,
इतना अधिक न कर सका, रण से मुझे हताश....

(आंसू पोंछता हुआ)

किंतु प्रियवर कर्ण को जिसने दिया है मार,
उसी शठ का करूंगा मैं कुल सहित संहार...

(मुंह ढक लिया)

विदुर— वत्स, क्षणभर तो आंसू रोको।

दुर्यो— जिसने मेरे हेतु, प्राण देदिये समर में,
कोई शांति-निकेत, रोक सका न उसे, अहो...
तजते हैं दृगनीर, उस के दुख से दुखी हो
फिर क्यों हे मति-धीर, आप मुझे हैं रोकते...?...

विदुर—हमारे कुल का अन्त करने वाला यह कठिन कर्म किसने किया?

सारथी-हे महामति, लोग यों कहते हैं कि

'कर्ण का रथ-चक्र रण में जब धरा में धंस गया,
मांस-मज्जा-पंक में जब वहां बिलकुल फंसगया,
कृष्ण के आदेश से तब विजय ने शर छोड़कर,
मार डाला' उन्हें, रण-मर्याद सारी तोड़कर।

दुर्यो—(उठ कर, क्रोध से)

हैं! ऐसा अन्याय! कभी न देखा समर में!!
निश्चय रण में हाय, हना गया रण-धर्म भी !!!

बस, सूत तू जल्दी जाकर रथ लेआ, मैं अभी कर्ण का बदला चुकाता हूं।

संजय--राजन्, यदि ऐसा ही है तो किसी को सेनापति बना दीजिये।

दुर्यो--वह तो मैं ने बना भी दिया।

संजय-किसे? शल्य को या अश्वत्थामा को?

दुर्यो—(माथे पर हाथ रखकर)

अनवरत जलधार से कर चुका निज अभिषेक,
काम करना है मुझे अब समर में बस एक,
अभी कर दूंगा धनञ्जय को सदा को शांत,
या मिलूंगा कर्ण से जा स्वर्ग में निर्भ्रान्त।

विदुर--ठीक है, परन्तु देखो यह अश्वत्थामा आरहा है इस से अच्छी तरह मिलो।

संजय--यह अपने पिता के बध से बड़ा क्रोधित होरहा है।

(प्रवेश अश्वत्थामा का)

अश्व— हे राजन् कौरवनाथ! आपकी जय हो,
नित बढ़े आपका सुयश, शत्रु का क्षय हो।

दुर्यो--(उठ कर) गुरु-पुत्र, इस पर विराजिये (बैठ गया)

अश्व--हे राजन्!

कह कर्ण-सुखद अनेक बातें कर्ण ने जो आज,
साहस दिखाया समर में, वह ज्ञात है महाराज?
बदला न लेने का न करिये दुःख अब कुरुनाथ!
चलिये रिपुक्षय को, सधनु मैं आपके हूं साथ;

क्योंकि मैं ने तो पिता का बदला चुकाने का पूरा इरादा कर ही लिया है।

दुर्यो--(अनादर से) आचार्य पुत्र!

जब रण में हो चुका अंत प्रिय अंगराज का,
डूब-चुका जब यान पोत सब सुख-समाज का,
तब आये हैं आप! तनिक अब धीरज धरिये,
दुर्योधन के निधन-काल तक और ठहरिये,
और, मिट जावे रण-भीति से, जब मेरा भी चित्र,
तब जो जी चाहे वही, करियेगा हे मित्र।

अश्व—अभी तक कर्ण का पक्षपात नहीं छूटा है, अब भी मेरे साथ ऐसा ही बर्ताव! (क्रोध से) अच्छा राजन्! कौरवेश्वर! ऐसा ही होगा। (गया)

संजय—राजन् आपको अश्वत्थामा का इस प्रकार अपमान–

दुर्यो—(रोककर) मैंने क्या अपमान किया, क्या निन्दा की? मेरे सामने ही मेरे परम मित्र अद्वितीय वीर अंगराज की बुराई करता है! अर्जुन में और इस में क्या अन्तर है? (गया)

विदुर--संजय, अब समझाने का काम नहीं है, रोग असाध्य होगया। मृत्यु के वश पतंग अपने आप दीपक पर गिरता है अब कहने सुनने से कुछ मतलब नहीं-जिस समय भरी सभा के बीच द्रौपदी का चीर खींचा गया था और पांडवों का अपमान हुआ था मैं तो उसी समय समझ गया था कि अवश्य कुछ न कुछ अनिष्ट होगा-राजा धृतराष्ट्र को भी बहुत समझाया पर वे भी अपने पुत्र के ही कहने में चला किये-संजय, कर्मों का फल किसी के रोकने से से रुक नहीं सकता-चलो अब प्रज्ञाचक्षु धृतराष्ट्र को ही आश्वासन दें--पापी के पाप कर्म ही उस के नाश के कारण होते हैं इस में संदेह नहीं-
(गये)

सीन ३

(स्थान--रणभूमि का एक भाग)

(खून से भीगे भीम, अर्जुन और कुछ वीर लोगों का प्रवेश)

भीम--अरे दुर्योधन के नौकरो! डरके मारे इधर उधर क्यों भागते हो? क्यों शंका करते हो?

किया द्यूत में जिसने छल, जतुगृह बनवाया,
भरी सभा में कृष्णा का कचचीर खिंचाया,
सौ भ्राताओं में बड़ा, मित्र कर्ण का, वीर,
कहो कहां वह छिपरहा, दुर्योधन रणधीर?
उसका वह अभिमान, उसके सँग ही भागकर
क्या भावी अवसान, सहित कहीं है जा छिपा?

(एक डौंडीवाला आया)

डौं. वा.—हे कुरु-कुल-कमलिनि-कुंजर!

भीम—(अकड़कर) हां, क्या कहता है?

डौं. वा.—(ढोल पीटकर) हे हे महाबलवान भीमसेन और अर्जुन देव!

जिन्का प्रताप महि-मंडल में समाया,
करते प्रकाश सब ओर स्वकान्ति से जो,
वे धर्मराज यशधाम सुपुण्य-पुञ्ज
आदेश हैं कर रहे यह पांडवों से:-

अर्जुन—हां क्या आज्ञा की है?

डौंडी वा.—अस्त हुए रवि, रिपु समस्त भी अस्त होगये,
बड़े २ बलधाम सदा को आज सोगये,
लौटालो अब सैन्य, सभी शिविरों में आओ,
करलो अब आराम, विजय-आनंद मनाओ,
ले गृद्ध काग से देह निज-
बंधु बांधवों की सभी,
घर धैर्य शांति के साथ जन
अंतिम कर्म करें अभी।

दोनों—बहुत अच्छा (सब गये)

एक्ट ६

सीन १

स्थान-एक शिविर के सामने

(प्रवेश बुद्धिप्रकाश और एक नौकर का)

बुद्धि—संसार में हमारा भी कितना अच्छा काम है? जो हवा का काम है सो हमारा काम है; क्योंकि हवा भी गुप्त चर है और हम भी; दूसरे, हवा के बिना मनुष्यों का जीवित रहना कठिन है, और गुप्तचरों के बिना राजाओं का जीवित रहना कठिन है। 'सब का समय बदलता रहता है' इस लोकोक्ति को हमारा जीवन अच्छी तरह सार्थक करता है क्योंकि कभी हम राजा होजाते हैं, कभी भिक्षुक, कभी सिपाही; कभी बीमार, कभी पागल, कभी पंडित; उदर पूर्ति के लिये सब काम करने पड़ते हैं।

नौकर—आपने बिलकुल सच कहा।

बुद्धि—अच्छा, हां, आज मेरे लिये श्रीमान् वृकराज जी का क्या आदेश है?

नौकर—श्रीमान् ने कहा है कि आज हमारे महाराज दुर्योधन और भीम का गदा युद्ध है इस कारण तुम मुनि का बेश बना कर जहां युधिष्ठिर, द्रोपदी आदिक हों वहां जाना और बातों ही बातों में उन्हें यह विश्वास दिलादेना कि भीमसेन मारागया—इस पर युधिष्ठिर

अवश्य प्राण त्याग देंगे क्योंकि उन्हों ने प्रण कर लिया है कि एक भी भाई के मारे जाने पर प्राण न रक्खूंगा; यदि यह बात होगई तो फिर निश्चय राज कौरवों के ही हाथ रहेगा क्यों कि जब वे प्राण त्यागदें तब तुम युद्ध-भूमि में जाकर सब को बतलादेना कि युधिष्ठिर ने प्राण त्यागदिये। इस को सुनते ही पांडवों की ओर से युद्ध बंद होजायगा।

बुद्धि--यह तो सब ठीक है, पर क्या युधिष्ठिर जी गदायुद्ध देखने नहीं जायंगे?

नौकर--नहीं, वे नहीं जायंगे, एक विश्वस्त सूत्र से ऐसा ही सुना है।

बुद्धि—अच्छा तुम ठहरो, मैं मुनिका वेश बना आऊं।

(शिविर में गया)

नौकर—जो कहीं यह बात चल जाय तो बस फिर तो काम ही बन जाय, और हम लोगों को भी इतना इनाम मिले कि घर बैठे खाया करें।

(मुनि के वेश में बुद्धिप्रकाश आया)

बुद्धि—अलख ! अलख !

नौकर—(देखकर) यह कौन है ? अहा, स्वामी, मैं ने तो आप को पहिचाना भी नहीं, आप तो सचमुच अलख हो गये।

बुद्धि—खूब देखले कि मुझे कोई पहिचान तो न लेगा क्योंकि पांडवों के पास भी बड़े बेढब भेदिये हैं। और देख! थोड़ी देर में तू भी मुनि का वेष बनाकर वहीं आजाइयो और मेरी बातों का समर्थन करियो।

नौकर—बहुत अच्छा (बुद्धि० को चारों ओर से देखकर) स्वामी, आपको कोई भी नहीं पहिचान सकता।

बुद्धि—अच्छा तो अब जाता हूं, और सिद्धि तो परमात्मा के हाथ है (घुटने टेककर, हाथ जोड़कर प्रार्थना करता है)

(दादरा)

जय २ प्रभु सदय हृदय, हो कुरु-कुल पर कृपालु-
ऐसी आशिष प्रदान, करिये मुझे दीन जान
स्वामि काज पूर्ण करूं, जय जय जय हे दयालु,
जय २ प्रभु०

(जवनिका पतन)

सीन २

(स्थान-शिविर के सामने)

(युधिष्ठिर, द्रोपदी, बुद्धिमातिका दासी और जयंधर और बुधक आदि नौकर बैठे हैं)

युधि—(चिंता से, लम्बी सांस लेकर)

भीष्म-महार्णव से तरकर
द्रोणानल से भी पाया पार,
कर्ण-सर्प भी शांत होगया
पहुंचा शल्य स्वर्ग के द्वार,
'आज हनूंगा दुर्योधन को
अथवा तजदूंगा निज प्राण'
भमिसेन के इन बचनों ने
डाली है संशय में जान।

द्रो—महाराज, इस प्रतिज्ञा का मैं ही कारण हूं यह समझिये ।

युधि—नहीं इस सब अनर्थ का तो मैं ही कारण हूं (बुधक की ओर देखकर) बुधक !

बुधक—आज्ञा ? महाराज,

युधि—सहदेव से कहदे कि भीमसेन की कड़ी प्रतिज्ञा का विचार कर दुर्योधन के ढूंढने के लिये निपुण और सब बातें जानने वाले गुप्तचर चारों ओर नियुक्त करदें, और यह घोषणा करादें कि जो कोई कुरुराज का पता बतावेगा उसको धन और ग्राम आदिक बहुत कुछ इनाम दिया जायगा। नदी के तट या रेत में धीवर, बनों में गोप, और व्याघ्रादि के जहां भिटे हों उन जंगलों में व्याध लोग जाकर दुर्योधन के चरणों के निशानों का पता लगावें, और मुनियों की कुटियों में ब्रह्मचारी वेश धारी गुप्तचर खोजें ।

बुधक—बहुत अच्छा महाराज ।

युधि—देख, सहदेव से यों कहियो कि उन लोगों को समझादें कि जो कहीं अकेले में दश पांच आदमी बातें करते हों, या बन में सो रहे हों, या रोगग्रस्त हों उन सब का भेद लें; जहां मृग डर कर भाग रहे हों या पक्षी चिल्ला रहे हों वहां पैरों की छाप पहिचानें ।

बुधक—जो आज्ञा महाराज की । (गया)

(प्रवेश पांचालक का)

युधि—(देखकर) ओ हो, पांचालक जी आरहे हैं ।

पांचा—महाराज, जय हो २ ! आपको और महारानी द्रोपदी को एक हर्ष संवाद सुनाने आया हूं ।

युधि—हे भद्र पांचालक ! कहीं मिला उस कौरवाधम का पता?

पांचा—महाराज, पता क्या, सारे अनर्थों की जड़ वह खुद ही मिल गया ।

युधि—(हर्ष से) ओ हो, यह तो बड़ी प्रिय बात कही, क्या वह दीख गया ?

पांचा—देव, वह तो समर में आगया, यह सुनिये ।

द्रो—(भयसे) मेरे नाथ का समर में क्या हाल है ?

युधि—(शंका से) क्या भीमसेन समर में है ?

पांचा—जी हां कुमार भीमसेन समर में ही हैं ।

युधि— है विक्रमशाली भीम जानता हूं मैं,
है अद्वितीय वह बली, मानता हूं मैं,
तो भी, क्या होगी विजय उसी की रण में ?
सुस्नेह-जन्य शंका होती यह मन में ।

द्रोपदी की ओर)

अयि सुक्षत्रिये !

जिस राजसभा में थे अगणित नरनारी,
ऋषि, मुनि, राजा सब–मानी, धनी, भिखारी,
उन सब के सन्मुख वह अपमान हमारा,
जो किया गया था दुर्योधन के द्वारा,

बस उसका यह प्रतिकार-दिवस है आया,
जिसकी सुप्रतीक्षा में सब समय बिताया,
अब निश्चय कुरुवन-दहन करेगा भीम,
देगा हम सबको हर्ष आज निस्सीम,
यदि हुआ न यह, तो फिर हम सब निज प्राण,
आत्माभिमान पर करदेंगे बलिदान,
आत्माभिमान का जिसमें लेश नहीं है,
निश्चय जीवन कुछ उसमें शेष नहीं है।

द्रौ—महाराज, आपने बिलकुल सच कहा।

युधि—भद्र पांचालक! ज़रा कहो तो कि वह किस तरह और कहां पकड़ा गया? और अब क्या करता है।

पांचा—अच्छा तो सुनिये, कि जब आपने शल्य को मार डाला और जब गांधार-राज रूपी पतंग सहदेव की क्रोधाग्नि में भस्म हो गया, और जब सेनापति के मरने से कुरुसेना के बिलकुल पैर उखड़ गये, और जब आप की सेना ने हर्ष दुंदभि बजाना प्रारम्भ किया, और कृप, कृतवर्मा और अश्वत्थामा भी जब जान लेकर भागे तब भीमसेन की प्रतिज्ञा सुनकर वह दुरात्मा कौरवाधम भी कहीं जा छिपा।

युधि—अच्छा तब?

पांचा—तब एक रथ पर बैठकर श्री कृष्ण, भीम और अर्जुन उसे खोजने गये, और बहुत खोजा पर कहीं भी पता न पाया; हम लोग भी उन के साथ थे। पता

न मिलने पर तो सब लोग बड़े दुखी हुए, भीमसेन भी कटाक्ष से गदा की ओर देखने लगे, और लोग भी लम्बी २ सांस लेने लगे और दैव को कोसने लगे, सभी निराश होचुके थे किंतु इसी अवसर में मृग के रुधिर से भीगा हुआ और भागने के कारण हांफता हुआ और बड़बड़ाता हुआ एक धीवर आया और बोला। कि हे कुमार! इस तालाब के किनारे दो पैरों के चिन्ह पाये जाते हैं इस से ऐसा ज्ञात होता है कि कोई इस में घुस तो गया है पर इधर से लौटा नहीं है, तनिक चलकर देख लीजिये; तब हम सब उस के साथ होलिये और उन चिन्हों से भगवान् श्री कृष्ण ने तुरन्त पहिचान लिया कि ये चरण दुर्योधन के ही हैं, और क्यों कि वह जलस्तम्भनी विद्या जानता है इस कारण हो न हो इस तालाब में ही छिपा पड़ा है। श्री कृष्ण की यह बात सुनकर भीमसेन ने बड़ी भयंकर गर्जना की और ललकार कर कहा कि अरे धृतराष्ट्र-कुल-कलंक, अपने पौरुष का मिथ्या घमंड करने वाले, पांचाली के केश और वस्त्र खिंचवाने वाले महापापी, निर्लज्ज, चन्द्रवंश के कलंकित करने वाले! इतनी दुर्दशा होने पर भी तेरी बुद्धि ठिकाने नहीं आई और तू सदा दुःशासन के मारने वाले मुझे और श्री कृष्ण को भी गालियां दिया करता है! और अब मेरे डर के मारे लड़ाई से भागकर कीचड़ में जा छिपा है!! अरे क्षत्रियाधम! ज़रा निकले तो सही बाहर; देख आज

कृष्णा के क्रोध की कैसी पूर्ण उपशांति करता हूं। अरे मानान्ध कौरवाधम! मैं ने तेरे सौ भाइयों को मारा और दुःशासन का लोहू पिया तो भी तुझपर मेरा कुछ न होसका, और अब बदला लेने के समय मेढ़कों और कछुओं में जामिला है!! धिक्कार है तेरे मनुष्यत्व को।

द्रौ.— नाथ, मेरा तो क्रोध जाता रहा बस आपका दुर्लभ दर्शन यदि होजाय तो।

युधि—हां फिर?

पांचा--यह कह कर भीमसेन जी अपनी भयंकर गदा घुमाते हुए उस तालाब में कूद पड़े और उसे बिलकुल उथल पुथल कर डाला जैसे कि एक हाथी नलिनी को करता है। उन के इस कर्म से जलचर मूर्छित होने लगे, और पक्षी डर के मारे भागगये और बहुत सा जल किनारे पर आगया।

युधि—भद्र! क्या दुर्योधन तो भी न निकला?

पांचा--देव! निकला क्यों नहीं, जब भीमसेन की भुजारूपी मंदराचलने तालाब रूपी क्षीरसागर को मथा तब दुर्योधन रूपी कालकूट उस में से निकला।

युधि—वाह, सुक्षात्रिय! धन्य।

द्रौ. —युद्ध हुआ या नहीं?

पांचा--तब उस तालाब में से निकल कर और दोनों हाथों से भयंकर गदा उठाकर कहने लगा कि अरे भीमसेन

यह क्या बकता है कि मेरे डर से दुर्योधन छिपगया? मूर्ख, पांडुपुत्रों को बिना मारे विश्राम करना मेरे लिये लज्जा की बात है इसलिये इस के भीतर आराम कर रहा था-उस की यह बात सुनकर अर्जुन और श्री कृष्ण उन दोनों को किनारे पर लेआये, तब दुर्योधन पृथ्वी में गदा रखकर बैठ गया, और अपनी सेना के अगणित वीरों की गिद्धों और कौओं द्वारा की गयी दुर्दशा देखकर और पांडव-सेना का सिंहनाद सुनकर और अपने को बंधु-बांधव रहित देखकर जब समर भूमि को देखा तो लम्बी २ सांस लेने लगा तब भीम ने उससे कहा कि हे कौरवराज! अब अपने मरे हुए बंधु बांधवों का शोक करना वृथा है और यह दुःख करना भी वृथा है कि पांडव अनेक हैं और मैं असहाय अकेला हूं, क्योंकि हम पांचों में से जिससे तेरी इच्छा हो उसी से युद्ध करने को खड़ा होजा-यह सुन कर कुछ दुःख से भीमसेन की ओर देखकर बोला कि अर्जुन ने कर्ण को मारा है और तूने दुःशासन को इसलिये तुम दोनों ही मेरे लिये बराबर के शत्रु हो, पर तू अधिक अप्रिय है इसलियें तुझ से ही युद्ध करूंगा यों कहकर गदा लेकर खड़ा हो गया और दोनों एक दूसरे पर क्रोध कर करके प्रहार करने लगे; मुझे श्री कृष्णजी ने आपके पास यह कह कर भेजा है कि दुर्योधन के छिप जाने पर हमें बड़ी चिन्ता हुई थी कि किस भांति भीमसेन अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर

सकेगा, परन्तु अब वह मिल गया है, अब इसमें संदेह नहीं कि शीघ्र ही भीमसेन इसको मारकर कौरव-वन के अकेले बचे हुए विटप का भी दहन आज ही कर देगा इसलिये आप विजयोत्सव की तयारियां कराइये अब सन्देह का स्थान नहीं है।

द्रौ—(हर्ष से आंसू भरकर) जो भगवान त्रिभुवननाथ कहते हैं उसमें किसे संदेह हो सकता है ?

पांचा—बस यह उनका आदेश समझिये।

युधि—बहुत अच्छा, अरे कोई है ?

नौकर—(उठकर) मैं उपस्थित हूं महाराज, आज्ञा कीजिये।

युधि—श्री कृष्णजी की आज्ञा है कि भीमसेन के विजय-मंगल की तयारियां की जायं—जाओ तुम प्रबन्ध करो।

नौकर—(शिर झुकाकर) बहुत अच्छा। (गया)

युधि—आर्य जयंधर ! जाओ प्रिय संवाद सुनाने वाले पांचालक को पारितोषिक देकर संतुष्ट करो।

जयं—बहुत अच्छा। (पांचालक के साथ गया)

द्रौ—महाराज, नाथ भीमसेन ने यह क्या सोचकर कहा कि हम पांचों में से जिससे चाहे उससे लड़ले ? यदि वह नकुल या सहदेव के साथ लड़ता तो कैसी होती ?

युधि—जरासंध के मारने वाले भीमसेन का यह उद्देश था कि इसके सब बंधु, बांधव, अनुज और राजा लोग तो मारे ही जा चुके हैं, केवल कृपाचार्य, कृतवर्मा और अश्वत्थामा ये ही तीनों बचे हैं सो ये भी अपनी जान छिपाते फिरते हैं, ग्यारह अक्षौहिणी सेना भी

मारी जा चुकी है, अब केवल आपही अकेला रह गया है सो कहीं अपने अभिमान को छोड़कर आयुध न त्याग बैठे, या कहीं तपोवन में न भाग जाय, अथवा अपने पिता द्वारा संधि न करवाले-यदि ऐसा हुआ तो सब कौरवों के मारने की प्रतिज्ञा का पालन होना असम्भव हो जायगा इसीलिये भीम ने वह बात कही, और वो हम पांचों में से किसी से भी नहीं जीत सकता, पर मुझे विश्वास है कि गदायुद्ध में भीमसेन से ही वह लड़ा होगा, इसमें संदेह नहीं कि दुर्योधन में भी फुर्तीलापन अधिक है—

(नेपथ्य में) अरे है कोई जो मुझे पानी पिलाकर मेरी जान बचावे—

युधि—कौन है यह ?

(प्रवेश मुनि के वेश में बुद्धिप्रकाश का)

मुनि—(आपही आप) देखो कैसा उल्लू बनाता हूं (प्रकट) अरे भाई कोई इस प्यासे को पानी और छाया देकर इसकी जान बचालो।

(सब का उठखड़े होना)

युधि—हे मुनीश्वरजी, प्रणाम करता हूं।

मुनि—मैं बड़ा प्यासा हूं इसलिये मुझे जल पिलाकर तृप्त कीजिये।

युधि—मुनीश्वरजी, इस आसन पर विराजिये।

मुनि—(बैठकर) अब आप भी बैठिये।

युधि—अरे कोई है ?

(एक नौकर का झारी लेकर प्रवेश)

नौकर-महाराज, यह मिष्ट और सुगन्धित जल पीने के लिये उपस्थित है।

युधि—महाराज, जल लेकर अपनी प्यास बुझाइये।

(मुनिका जल लेकर पैर धोना और थोड़ासा पीना)

मुनि—आप क्षत्रिय मालूम होते हैं ?

युधि—आपने ठीक जाना, मैं क्षत्रिय ही हूं।

मुनि—आज कल तो इस संग्राम में आपके भाई बंधु नित्यही मारे जाते हैं-उफ़्, ठंडी हवा होने पर भी पसीने निकलते हैं।

युधि—(नौकरसे) अरे, पंखा झलो मुनीश्वरजी का।

नौकर-बहुत अच्छा महाराज (पंखा झलता है)

मुनि—आप के शिष्टाचार से मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूं।

युधि—हे मुनीश्वरजी, आप इतने थक क्यों रहे हैं ?

मुनि—कुतूहल में आकर मैं इस महा संग्राम को देखने के लिये आगया था, आज धूप कड़ी है इसीलिये यह हाल हो रहा है, अर्जुन और दुर्योधन का गदायुद्ध देखकर आता हूं।

नौकर-मुनीश्वर जी, 'भीम और सुयोधन का' यों कहिये।

मुनि—आः, बिनाही कुछ जाने बूझे क्यों मेरी बात काटता है ?

युधि—महाराज कहिये २

मुनि—क्षणभर आराम करके आपसे सब कहदूंगा।

युधि—कृपा कर कहिये कि क्या अर्जुन और सुयोधन का युद्ध हो रहा है ?

मुनि—मैं तो पहिले ही कह चुका कि अर्जुन सुयोधन का युद्ध हो रहा है।

युधि—क्या भीम और सुयोधन का नहीं हुआ ?

मुनि—वह तो कभी का हो चुका

(युधिष्ठिर और द्रोपदी का मूर्छित होना)

(सब नोकरों का पंखा झलना और जल छिड़कना)

नौकर—राजन्, धैर्य धरिये २

युधि—(होश में आकर) हे मुनीश्वर जी, आप क्या कहते हैं कि भीमसेन और सुयोधन का गदा युद्ध हो भी चुका ?

(गुप्तचर के नौकर का मुनिके वेष में प्रवेश)

मुनि—(दूसरे मुनि की ओर) आइये श्री भवानन्द सरस्वती जी, विराजिये। (बैठ गया)

द्रो—(सहसा उठकर) यह आप क्या कहते हैं ?

मुनि—(नौकर की ओर देखकर) क्यों जी! ये दोनों कौन हैं ?

नौकर—भगवन्, ये महाराज युधिष्ठिर हैं और ये महारानी द्रोपदी हैं।

मुनि—ओः, तब तो मैंने बुरा किया जो इन से यह बात कही।

द्रो—हा नाथ भीम.... (मूर्छित हो गयी)

युधि—यदि यह सत्य है तो युधिष्ठिर अभी प्राण त्याग देगा।

मुनि—कहिये भवानन्दजी, अर्जुन और दुर्योधन का गदा युद्ध हो रहा है ?

भवा—हां महाराज हो रहा है, पर अर्जुन से तो सुयोधन गदायुद्ध में अधिक अभ्यस्त है।

युधि—(दुःख से) महाराज कृपाकर इस का पूरा वृत्तान्त सुनाइये।

मुनि—अच्छा, यदि आप नहीं मानते हैं तो संक्षेप में कहे देता हूं।

युधि— है व्याकुल मेरा हृदय अहो मुनिराज,
है आतुर सुनने को यह सकल समाज,
अब द्वंद युद्ध का बर्णन कृपया करिये,
बस दया कीजिये, सब का संशय हरिये।

मुनि—अच्छा तो सुनो
जब दुर्योधन-भीम में, हुआ युद्ध बिकराल

द्रो—(सहसा उठकर) तब क्या हुआ ?

मुनि— आ पहुंचे बलराम भी, अनायास उस काल;
तब उनसे प्रिय शिष्य ने पाकर कुछ संकेत,
दुःशासन--बध का लिया बदला हर्ष समेत।

भवा—आपने सत्य कहा, अवश्य उसने कुछ संकेत बलराम से पाया था, नहीं तो भीम कुछ उस से कम नहीं था।

युधि—हा वत्स वृकोदर ! (मूर्छित हो गया)

द्रो—हा नाथ भीमसेन ! .... मेरे पीछे अपने प्राण गंवाने वाले... हा जटासुर, वक, हिडिम्ब, किर्मीर, कीचक और जरासन्ध के मारने वाले !... उत्तर तो दो....
(मूर्छित हो गयी) (सब लोग पंखा झलते हैं)

नौकर-(आंसू पोंछता हुआ) हा कुमार भीमसेन ! हा धृतराष्ट्र-कुल-बन का दहन करने वाले ! हाय तुम कहां गये ? महाराज धैर्य धरिये २ ; भगवती ! उठिये २ मुनिराज जी ! आप भी इनको धैर्य प्रदान करने की कृपा कीजिये।

(जयंधर का प्रवेश)

जयं—(देखकर दुःख और आश्चर्य से) हाय यह क्या हुआ ?

(सोहनी)

देखने वालो कहो तो हाय यह क्या होगया...
जो अभी थे हर्ष करते, क्यौं पड़े हैं भूमिपर ?
कौनसा, हा, रत्न कुंती का कहो तो खो गया ?
हे महारानी, महाराजा उठो, हा क्या हुआ ?
कौनसा प्रिय अनुज रण में, हा सदा को सो गया ?
देखने वालो०

मुनि—हे भीम के बड़े भाई थोड़ी देर और धैर्य रखिये, कथा थोड़ी सी और रही है।

युधि—(चेतकर) महर्षि क्या कहा ? अभी कुछ और शेष है ? हा...क्या है ?

मुनि—भीमसेन के बाद क्रोधित होकर अर्जुन ने लड़ने को गदा उठाली, कृष्ण ने बहुत रोका पर दुर्योधन के 'आइये, आइये' ये शब्द सुन कर वह भी लड़ने को कूद पड़े, यह देख कर अर्जुन के पक्षपाती श्री कृष्ण बलरामजी को रथ पर बैठा कर द्वारका की ओर लेगये।

युधि—अर्जुन तुम धन्य हो.. हा भीमसेन !

मुनि—बस वहीं से मैं आरहा हूं।

भवा—बस वहीं से मैं भी आरहा हूं।

युधि—बस महाराज, अब सुन कर क्या करना है,... हा भीमसेन... हा जतुगृह-समुद्र से पार पहुंचाने वाले यान पोत !...हा किर्मीर, जरासन्ध आदि के मारने वाले...

हा कीचक और कौरवों के कराल काल....हाय मुझ द्वारा द्यूत में हारे गये, हा मेरे आज्ञाकारी... हा कौरव-वन-दावानल !

(सोहनी)

द्यूत में, हा, हार कर था दास तुम्हें बना दिया,
और नाना भांति से अपकार था मैंने किया,
तब न छोड़ा हाय तुमने, अब मुझे यों छोड़कर,
क्यों, कहां जाते हो. .हा. .हा. .इस तरह मुख मोड़कर।

द्रौ—(पागल की तरह उठकर) महाराज ! क्या हुआ ?

युधि—(आंसू पोंछता हुआ)

(सोहनी)

शौर्य-साहस-मूर्ति तेरा नाथ प्रियवर है कहां...
प्रिय अनुज मेरा अरे...हा हा...वृकोदर है कहां...
बकादिक को मारनेवाला गदाधर है कहां,
हा अतुल बल-धाम, हा कुरु-नलिनि-कुंजर है कहां।

द्रौ—(आकाश की ओर देखकर) नाथ भीमसेन, तुमने मेरे केश बांधने की प्रतिज्ञा की थी, क्षत्रियों को प्रतिज्ञा भंग न करनी चाहिये, इसलिये इसको पूरी करो, देखो मैं तुमारे पास ही आती हूं।

युधि—(ऊपर देखकर) हा माता कुन्ती, सुना अपने पुत्रका हाल ? हाय मुझे अकेला रोता छोड़कर कहीं चला गया है (नीचा मुँह करके) हाय, इस में मेरा ही दोष है, जब मैंने जुए में हारा तब कुछ नहीं कहा, बल्कि उलटा हर्षित हुआ, मेरे ही पीछे विराट के भवन में

रसोईये का काम किया....हा...तेरे शीलत्व आदि गुण देखकर...जिन मनुष्यों में अच्छे गुण होते हैं वे अल्पायु ही होते हैं...तुझ में सभी अच्छे गुण थे...हा... (मुनिसे) महाराज क्या कहते हो कि:-

'जब दुर्योधन भीम में हुआ युद्ध विकराल,
आपहुंचे बलराम भी, अनायास उस काल,
उन से ....पाकर कुछ संकेत,
दुःशासन-बध का बदला लिया...

मुनि—यही बात है।

भवा—हां, बिलकुल यही बात हुई थी।

युधि—धिकार है मेरे भाग्य को (ऊपर देख कर) भगवन् बलराम जी! कृष्ण के बड़े भाई!

तज क्षत्रिय का धर्म, बन्धु भाव को भूलकर,
यह क्या अनुचित कर्म, भला आपने कर दिया?
दोनों शिष्य समान, समस्नेह के पात्र थे,
भला भीम-अवसान, इष्ट रहा क्यों आप को?
वासुदेव का मित्र, अर्जुन है मम प्रिय अनुज,
उलटा पक्ष विचित्र, कहिये तो फिर क्यों किया?
अथवा, पक्षपात के मूल, मन्द भाग्य मेरे रहे,
इसी लिये प्रतिकूल, आप हमारे होगये!

(द्रोपदी के पास जाकर) हे पांचाली उठ, उठ मुझे और तुझे बराबर दुःख है, फिर अपनी मूर्छा से क्यों मुझे व्याकुल करती है?

द्रो-- (चेतकर) नाथ ! तुमने तो मुझ से प्रतिज्ञा की थी कि

कुरु-बन का जब दहन करूंगा,

तब ही धैर्य बंधाऊंगा- और

घने रुधिर से लिप्त भुजाओं से तब प्यारी,

बांधूंगा ये केश हरूंगा पीड़ा सारी।

(नौकरनी की ओर) क्यों री ! तेरे सामने तो की थी ? क्या कहा ? (जयंधर से) श्री कृष्ण ने कहला भेजा है कि विजयोत्सव की तयारियां करो...क्या भगवान का बचन मिथ्या भी हो सकता है...हे नाथ भीमसेन, मैं तो अब तुमारे पास आती हूं...महाराज ! मेरे लिये चिता तयार कराइये...और आप भी क्षत्रिय धर्म को याद करके जो उचित समझें कीजिये....

युधि--ठीक कहा पांचाली, अच्छा चिता तयार करा कर...तेरा दुःख दूर...और मैं भी अब...दुर्योधन से ही...लडूंगा। ...(सोचकर)...पर अब लड़ने से क्या होगा... एक बार युद्ध-स्थल पर जाऊंगा अवश्य...

मुनि--(घबराकर) राजन् ! वहां जाकर आप क्या करेंगे-जो प्राण ही बिसर्जन करने हैं तो यहीं करदीजिये।

जयं--(क्रोध से) धिक्कार है आप को, देखने में तो आप मुनि हैं पर हृदय आप का राक्षसों से भी कठोर है।

मुनि--(अपने आप) अरे क्या इस ने मुझे पहिचान लिया ? (प्रकट) अरे जयंधर ! इसलिये ऐसा कहता हूं कि अर्जुन और दुर्योधन में गदायुद्ध हो रहा है,

मैं अच्छी तरह जानता हूं कि परिणाम क्या होगा, कहीं राजा को दूसरा अनिष्ट संवाद न सुनना पड़े इस लिये कहता हूं ।

युधि—(आंसू भरकर) मुनीश्वर जी, आपने स्नेह वश ठीक ही कहा ।

जयं—महाराज, आप शोकान्ध होकर क्षत्रिय धर्म क्यों छोड़ें देते हैं?

युधि—हे जयंधर! इन्द्र, वरुण और कुबेर से भी अधिक पराक्रमी और बलशाली भीम और अर्जुन को धूल में लोटते हुए और सुयोधन को उनके निधन पर कृतार्थ होकर हर्ष मनाते हुए मैं नहीं देख सकता... द्रोपदी! मेरी दुर्बुद्धि के कारण यह दशा हुई है पर अब शीघ्र ही हम दोनों भाई के पास पहुँचेंगे ।

मुनि—भरत कुल की बधू को पति के साथ मरना योग्य ही है।

भवा—मुनीश्वर जी आपने बिलकुल यथार्थ और शास्त्रानुमोदित बात कही--भरतकुल की आदर्श रमणियों को ऐसा ही चाहिये ।

द्रो.—महाराज शीघ्र ही चिता तयार कराइये ।

मुनि--हां शीघ्र ही लकड़ियां इकट्ठी कराइये और (आप ही आप) यदि आप कहेंगे तो आग मैं लगादूंगा, (प्रकट) अच्छा राजा, तो तुझे स्वर्ग लाभ हो और शीघ्र ही अपने भाई के दर्शन हों बस यही हमारी अशीष है, हम तो अब जाते हैं । (दोनों गये)

(सब का गमन)

एक्ट ७

सीन १

(स्थान-एक बाज़ार)

(प्रवेश कुछ पुरवासियों का)

पहि.—क्या कहा कि कौरव पांडव दोनों नहीं रहे ! यह बात तो कुछ समझ में नहीं आती-यह तो मैं जानता हूं कि आपस की फूट का फल अच्छा नहीं होता, और इस कौरव पांडवों की कलह का प्रायश्चित्त भारतवर्ष को बहुत बुरी तरह करना पड़ेगा-पर यह तुम कैसे कहते हो कि पांडवों का भी नाश होगया !

दूसरा-भाई बात यह है कि कौरवों में से तो अकेला दुर्योधन ही बचा था न ?

सब—हां···हां

दूसरा-अच्छा तो भीमसेन का और उसका गदा युद्ध हुआ था यह भी तुम्हें ज्ञात हो ही गा ।

सब— हां—

दूसरा-और यह भी तुम सब जानते ही होगे कि भीमसेन युद्ध में मारा गया और दुर्योधन घायल होकर मरगया !

तीसरा—नहीं नहीं भीम नहीं मारागया! दुर्योधन मारा गया ।

चौथा— नहीं हां भीम ही मारा गया ।

पहि.—अच्छा हला गुला क्यों करते हो एक एक की बात सुनते जाओ ! हां भाई बोल तुझे क्या मालूम है ?

दूसरा-मुझे यह मालूम है कि भीमसेन युद्ध में मारा गया तब अर्जुन दुर्योधन से लड़ा पर मारा गया ! इधर

दुर्योधन भी घायल होकर मरगया, जब युधिष्ठिर आदि ने सुना कि भीम और अर्जुन मारे गये तब उन्हों ने भी द्रोपदी सहित प्राण त्याग दिये, यों दोनों वंशों का नाश हुआ यह ख़बर हमने एक विश्वस्त सूत्र से सुनी है।

चौथा– बस यही मैं ने भी सुनी है और एक दूसे मनुष्य से सुनी है जिसने द्रोपदी सहित युधिष्ठिर को जलते देखा था।

तीसरा—नहीं, बात असल में यह है कि भीम और अर्जुन नहीं मारे गये, दुर्योधन मारा गया है और भीम के विजयोत्सव के लिये तो पहिले ही से तयारियां होरहीं हैं।

पांचवां—भाई म...म...म...म मैं ने त...त... तो ख...ख... ख...ख़ास प...प...प... पांडवों के ए...ए...एक न...न...न... नौकर से ह...ह...ही य...य...य... ...य...बात सु...सु...सुनी है-कि ...इ...इयो...ओ... यो युधिष्ठिर अ... आदि ज...ज... जलगये; जु... जु... जुआघर में ब...भ... भी य...य...ह.. ह... हाल सब को म... मालूम है च...च...चाहो जिस... जिस से पू...छु...छ लो...ओ।

पहिला—क्यों जी जब भीम के विजयोत्सव की तयारियां होरहीं हैं तब वे लोग कैसे जलगये।

छठा— अजी ऐसा ही सुना है, गंधर्वसेन कहता था।

पहिला—चलो हटो, तुम सब के सब गंधर्वसेन हो, अपनी २ बकते हो ठीक किसी को नहीं मालूम-अरे मूर्खो,

कौरव-पांडवों की विजय पर तो भारतवर्ष का दारमदार है और उसी की तुम झूठी ख़बरें उड़ाते फिरते हो! तुम्हें लज्जा नहीं आती?

चौथा—नहीं जी मेरी राय में तो अश्वत्थामा ने कृपाचार्य को कुश्रा है।

पहिला—धिक् मूर्ख कहीं ऐसा भी संभव है?

चौथा— अजी हां कलाल ख़ाने में तो ऐसी ही ख़बर गर्म थी, मैं तो वहां से अभी चला आरहा हूं।

पहिला— अच्छा अब अधिक मूर्खता का परिचय देने की आवश्यकता नहीं है, चलो हम सब अपने आप चलकर निश्चय करलें-इस में संदेह नहीं कि दुर्योधन के गुप्तचरों ने नगर में इतनी झूठी ख़बरें उड़ा रक्खी हैं कि उन्हों ने सत्य को ऐसे ढक लिया है जैसे काला बादल चन्द्रिका को ढक लेता है, पर चलो अभी ठीक २ पता लगा जाता है। (सब गये)

सीन २

(स्थान.जंगल। चिता जलरही है.द्रोपदी युधिष्ठिर और कुछ नौकर खड़े हैं)

युधि—प्रिये, प्राण त्याग करने के पहिले कुछ संदेशा कहलवा देना चाहिये।

द्रो— हां अवश्य २

युधि—अच्छा बुद्धिमतिका, 'माता जी से कहियो कि

जिसने निकाला था हमें जतु के भवन से मात!
वह भीम तेरा प्रिय तनय और वही मम प्रिय भ्रात,
जो समर में था पांडवों का एक ही आधार,
है तज गया हा आज वह निस्सार यह संसार।

और जयंधर तुम सहदेव से कहना कि तुम हम सबों में अधिक बुद्धिमान हो और सदा मेरे आज्ञाकारी रहे हो इसलिये यह कहता हूं कि कहीं मेरे पीछे तुम भी प्राण न त्याग देना क्योंकि अभी तुमारी अवस्था भी थोड़ी है—तुम हमें भूलजाना और कहीं ऐसा न करना कि पिता जी का कोई नामलेवा पानीदेवा भी न रहे, और नकुल जो कि बचपन से ही अभिमानी है और जिसका पत्थर कासा कठोर हृदय है उसकी आज्ञा में रहना–और हे विनयंधर, नकुल से भी कह देना कि तुमारी भी आयु अभी थोड़ी है अतएव अपने भाइयों को भूलकर पितृऋण को तर्पणादि से चुकाना; यह काम तुमारे ही भरोसे है, अतएव

घर में, बन में, चाहे जहां, मतिधीर!
रह कर अपना पालन करो शरीर,
अथवा कर श्रीकृष्ण–भवन में वास
(रख कर प्रभु में सदा पूर्ण विश्वास)
किसी भांति से वत्स! बिताओ काल,
अधिक क्या कहें तुमसे! बुद्धि-विशाल!

जयंधर जाओ अभी जाकर उनसे ये सब बातें कहदो।

द्रौं— बुद्धिमतिका, प्रिय सखी सुभद्रा से मेरे ये वचन कह-दीजो कि उत्तराको चौथा महीना है, अपने कुल की प्रतिष्ठा के लिये इसे सावधानी से रखियो ।

जयं—(रोकर) हाय राजा पांडु, तुमारे पुत्रों का यह हाल ! हाय देवि कुन्ती, भोजराज के भवन की पताका !

[illegible]पुत-वन को पक्षपात के धामने
जला दिया है हाय आज बलरामने...

(रोता हुआ जाता है)

युधि—जयंधर ! जयंधर !

जयं—(लौट कर) कहिये महाराज !

युधि—हाय, देखो आशा अब भी मेरा पीछा नहीं छोड़ती है, देखो तुमारे भाग्य से यदि अर्जुन जीते हों तो उनसे कह देना कि

भीम-बध के मूल हैं बलरामही,
है नहीं इसमें तनिक संशय कहीं,
कृष्ण के हैं ज्येष्ठ भ्राता इसलिये,
क्रोध उन पर अब न मन में कीजिये,
भाग्य में जीवन बदा हो तो, अहो...
छोड़ क्षत्रिय-धर्म बन में जा रहो ।

जयं—जो आपकी आज्ञा— (चला गया)

युधि—(द्रौ. से) प्यारी,

कर उठाकर और निज जिव्हा निकाल,
नाश कारिणि विश्वकी यह लाल लाल,
है बुलाती अग्नि हमको 'आइये,
सब दुखों को साथ ले जल जाइये।'

द्रो— महाराज, आप प्रसन्न होकर पहिले मुझे जानें की आज्ञा दीजिये।

युधि—तो चलो फिर हम तुम दोनों साथ ही चलें।

(नेपथ्य में) मारदिया, अ ह ह ह ह ह ह हा

द्रो— (चौंककर और ठहर कर) हैं! यह भयंकर शब्द कैसा सुनाई दिया।

(नेपथ्य में) आ हा हा हा हा! कहां हैं महाराज युधिष्ठिर और महारानी द्रोपदी?

युधि—यह निश्चय दुष्ट दुर्योधन भीम और अर्जुन को मार कर इधर ही आरहा है।

द्रो— हा आर्यपुत्र अर्जुन, तुम कहां हो? हाय अब हमें कौन बचावेगा? यदि जलेंगे तो यह दुष्ट जलने भी न देगा, हाय...अब क्या करें?

युधि—हाय अर्जुन, हा, निवातकवचों के हराने वाले, हा असदृश मल्ल, हा अस्त्र विद्या से भीष्म को संतुष्ट करने वाले द्रोणाचार्य के प्रिय शिष्य, हा कर्ण के काल, हा गन्धर्वों से दुर्योधन को छुड़ाने वाले, हा पांडु-कुल-कमालिनी के राजहंस! हाय माता कुंती को, मुझे और प्यारी द्रोपदी को छोड़कर कहां चलेगये....(मूर्छित होगये)

द्रो— हाय अब तुमारे बिना मेरी लाज कौन बचावेगा... (युधिष्ठिर के पास गिरकर रोने लगी)

(नेपथ्य में घोर शब्द के बाद)

'अरे मंत्त राक्षस, पिशाच, भूत, वैतालो! अरे गिद्ध कउए और उल्लुओ) अरे रण के बचे हुए वीर योधाओ!

मुझे देखकर मत डरो; बतादो मुझे कि याज्ञसेनी किस स्थान में है?

नौकर—हाय यह कुरु-कुल-कलंक देवी का अपमान करेगा, हाय, अरी बुद्धिमतिका! आ इन्हें अग्नि के पास लेचलें।
(उठाना चाहते हैं)

युधि—([illegible] खड़े होकर) पांचाली! मत डर, मत डर, कौन है यहां? लाना तो मेरा धनुष और बाण! अरे दुरात्मा नीच दुर्योधन! अभी तेरा गदा युद्ध-कौशल का गर्व पैनें बाणों से काटें देता हूं; अरे कुरु-कुलाङ्गार! अपने सौ भाइयों का बलिदान करके हर्ष मनाने वाले! अभी तेरे प्राण निकाले लेता हूं; अरे! अच्छा धनुष बाण नहीं सही, मैं बाहु-युद्ध से ही इस दुरात्मा को अग्नि में डाले देता हूं।

नौकर—(हौले से, द्रोपदी से) महारानी! शीघ्र अग्नि में प्रवेश कर अपनी मान रक्षा कीजिये, बदला लेने की आशा तो अस्त होगयी, हाय, आप अब भी क्यों खड़ी हैं, क्या सोच रही हैं?

युधि—प्रिये! ठहरो, इस दुष्ट दुर्योधन के मरने पर अग्नि में प्रवेश करेंगे। (द्रोपदी का भय से एक ओर होजाना)

(हाथ में गदा लिये, खून से भीगे हुए भीम का प्रवेश)

भीम—अरे बतलाओ कोई कि कहां है पांचाली? अरे वीरो! क्यों डरते हो?

भूत प्रेत मैं नहीं, नहीं मैं रक्ष निशाचर,
आया मैं तो अभी प्रतिज्ञा-सिंधु पार कर,

हूं मैं क्षत्रिय-वंश-जात, सब छोड़ो संशय,
क्यों छिपते मृत अश्व गजों में ? क्यों करते भय ?
(इधर उधर देखता है)

(द्रोपदी डर के मारे अग्निकी ओर भागना चाहती है नौकर निस्तब्ध खड़े हैं)

भीम—ठहर २ क्यों भागती है ? दुःशासन के द्वारा खोले गये केश तो....(पकड़ना चाहता है)

युधि—(बल से भीम को पकड़ कर) अरे दुरात्मा, भीम और अर्जुन के शत्रु ! दुष्ट दुर्योधन ! किधर जाता है ? अब यहां से एक पग भी नहीं हट सकता, अरे पुराने पापी...

भीम—(आश्चर्य से) अहो आर्य ! क्या आप मुझे सुयोधन समझ कर इस तरह पकड़े हुए हैं ? आर्य प्रसन्न हूजिये २ ।

नौकर-(ध्यान से देखता हुआ, हर्ष से) अरे ! ये तो कुमार भीमसेन हैं ! अहा महाराज ! ये तो कुमार भीमसेन हैं ! सुयोधन के लहू से इन का सब शरीर लाल हो गया है इसीलिये पहिचाने भी नहीं जाते !

बुद्धि—(ध्यान से देखकर) महारानी ! कुरुवन का पूर्णतया दहन करके ये कुमार भीमसेन आये हैं, इसमें संदेह नहीं।

द्रो—(संदेह भरी दृष्टि से देखकर) अरी क्यों झूठ बकती है?

युधि—(नौकर से) क्यों रे तू क्या कहता है ? क्या यह सत्य है कि यह मेरा बैरी सुयोधन नहीं है ?

भीम—हे देव, हे अजातशत्रु, क्या अब भी पांडवों का वैरी कोई 'दुर्योधन' इस संसार में रहगया है ? उसे

तो कभी का मारकर डाल दिया, और उस के रुधिर का चन्दन अपने शरीर में लगा लिया! और, आज से सारी पृथ्वी आप के अर्पण करदी, रण की अग्नि में कौरवों की उन के सहायकों समेत आहुति देदी—बस अब कुछ नहीं है केवल दुर्योधन के नाम के चार अक्षर ही खड़े रहे हैं; पर आप यह सब क्या कर रहे थे?

(युधिष्ठिर का ध्यान से भीम को देखकर अलग होजाना)

(प्रवेश घबराये हुए जयंधर का)

जयं--आर्य २! हे महाराज जल्दी सुनिये वे दोनों मुनि वेष धारी महाकुटिल कपटी दुर्योधन के गुप्तचर थे, उन्हों ने झूठ बोलकर आप को धोखा दिया--आर्य भीमसेन ने दुर्योधन को मार डाला है अब आप प्रसन्न हूजिये नकुल और सहदेव उन दोनों दुष्टों की खोज में गये हैं।

युधि—(हंसकर) अच्छा अब मैं प्रसन्न हुआ।

भीम—(पैरों पर गिरकर) आप की जय हो।

युधि—(प्रेमाश्रु बहाते हुए) क्यों वत्स! क्या अर्जुन जीता है?

भीम—हे अजातशत्रु, आप के सब शत्रु मारे गये और भीम और अर्जुन दोनों जीते हैं।

युधि--(स्नेह से) अच्छा पहिले यह तो बतलाओ कि क्या बकासुर के मारने वाले भीमसेन तुम्हीं हो?

भीम— आर्य! मैं ही हूं।

युधि—क्या जरासंध को भी तुम्ही ने मारा था?

भीम—हां आर्य मैं ने ही मारा था--हे द्रोपदी अब प्रसन्न हो, मेरी कौरवों को मारने की प्रतिज्ञा पूरी होचुकी है; बुद्धि-

मतिके! कहां है अब भानुमती जो प्रियाकी हंसी करती थी?

द्रौ— (हर्ष से) नाथ आपकी सदा जय हो, मैं तो खूब प्रसन्न हो गई।

भीम—प्रिये, कुरु-वन दहन तुम्हें मंगल कारक हो; मैं ने जो प्रतिज्ञा की थी वह याद है।

द्रौ— हां नाथ, याद है।

भीम—तो अब तो कुरु-वन-दहन हो चुका, अब दुःशासन द्वारा खोले गये इन अपने बालों को क्यों नहीं बंधवा लेती?

द्रौ— बंधवा लूंगी, नाथ—

युधि—प्रिये! देख, हमारे सौभाग्य से हमारा भमिसेन हमें फिर मिलगया है। आर्य जयंधर! जाओ श्री कृष्ण और अर्जुन को ढूंढलाओ, उन दोनों के दर्शनों को मैं इस समय अपने लिये अपने सब सुकृत-फलों की प्राप्ति समझूंगा।

जयं— बहुत अच्छा — (गया)

युधि—वत्स भीम! तुम बहुत थक गये हो तुमारे लिये जल आदिक लाता हूं-अथवा चलो इस श्मशान भूमि को छोड़ो, शिविर में ही चलो।

भीम—बहुत अच्छा महाराज।

(सब गये)

सीन ३

स्थान-वन

(प्रवेश बातें करते हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन का)

अर्जुन–क्या कहा महाराज? कि तुमारी विजय तुम्हें शुभ हो?

श्रीकृष्ण–हां,

रहे प्रे! सुखसे इस धरा पर आप शासन कीजिये,
दूर करिये विघ्न बाधा सुख सबों को दीजिये,
शत्रु का संहार जो इस भांति तुमने है किया
इन्द्रियों का जय उसी के साथ तुमने कर लिया,
शौर्य, साहस, धैर्य के तुम धाम हो सबसे बड़े,
पांच तुम वीरत्व-कीर्ति-स्तम्भ हो मानों खड़े,
इस तुमारी कथा से वीरत्व का संचार हो,
आत्मश्रम से मनुज निज दुख-सिंधु से नित पारहो,
सुन तुमारा नाम सब को भक्ति हो और हर्ष हो,
अधिक क्या, सब भांति तुम संसार के आदर्श हो।

अर्जुन–महाराज ! यह सब आप का ही किया हुआ है, हम भला क्या कर सकते थे, यह बिलकुल आप ही की कृपा का फल है ।

(नेपथ्य में) "अरे कोई हमें बचाओ ! हाय सुयोधन के मरते ही यह क्या अन्याय होने लगा, साधुओं की वृथा जान ली जा रही है, अरे कोई तो बचाओ भाई!"

(दोनों मुनि वेष धारी गुप्तचरों का और उनके पीछे नकुल और सहदेव का प्रवेश)

नकुल–(गुप्त०को पकड़कर और लात मार कर) अरे दुष्टो ! तुमे सरीखे ही बनावटी साधू संसार को ठगते फिरते हैं,

देखें तो अब कहां भागते हो बचकर ?

अर्जुन—वत्स नकुल ! क्या बात है, क्यों इन्हें पकड़ते हो ?

नकुल—भैया, ये दुर्योधन के गुप्तचर हैं, इन्होंने आज बड़ा अनर्थ किया होता, धोखा देकर धर्मराज के प्राण ही ले लिये होते, इन्हीं दुष्टों के कहने [illegible]कर वे और द्रोपदी दोनों अग्नि में जले जाते थे—

(प्रवेश जयंधर का)

जयं—चलिये महाराज श्री कृष्णजी और धनंजयजी ! महाराज युधिष्ठिर जी आपके बिना व्याकुल हैं (साधुओं को देखकर) अरे यही हैं वे साधुभेष-धारी धूर्त जिन्होंने आज पांडुकुल का नाश ही कर दिया होता। धर्मराज से कह दिया कि भीमसेन तो मारे गये और अर्जुन दुर्योधन से लड़ रहे हैं, बस यह सुन कर उन्हों ने, चिता बनाकर जलने की तयारी करली, अग्नि में बैठने ही को थे कि भीमसेन आगये यदि कुछ भी विलम्ब और हो जाता तो कैसा भीषण अनर्थ होगया होता ?

श्रीकृष्ण—अच्छा, सहदेव और नकुल ! तुमने अच्छा किया जो इन दुष्टों को पकड़ लिया, चलो इन्हें भी धर्मराज के सन्मुख ले चलो अपने और साथियों की तरह ये भी अपने किये का फल पावेंगे।

(सब गये)

सीन ४

(स्थान—नगर की सीमा के निकट वन-भाग)

(प्रवेश बातें करते हुए कुछ पुरवासियों का)

पहि.—देखो भाइयो, सब कौरव लोग मारे गये और पांडव हमारे राजा हुए हैं अब निश्चय है कि हमारे सब दुःख दूर [illegible]यंगे इस लिये तुम सब—

सब— हां समझ गये ।

पहि.—क्या समझगये ?

दूसरा—(एक टांग से नाचताहुआ) बकरी की तीन टाङ्ग बकरी की तीन टाङ्—

तीसरा—चुपरहो जी, हां क्या कहा? हम सब लोग क्या करें?

पहि—राजतिलकोत्सव की धूम धाम से तयारियां करो।

सब—बहुत अच्छा।

चौथा—और खूब दान पुण्य करो जिस से विद्या का प्रचार हो और कला कौशल की उन्नति हो।

पांचवां—और ऐसे साधु भेष धारी दुष्टों से बात न करो जैसे कि आज दो पकड़े गये हैं।

सब— सच कहा २

दूसरा—भाइयो, यदि मैं एक बात पूछूंगा तो तुम मुझे अवश्य पागल समझोगे।

सब— क्या बात है?

दूसरा—क्या इस महाभारत की लड़ाई में एक भी कौरव नहीं बचा, क्या कुरु-वनका पूर्ण रूप से दहन होगया?

पहि.—

निज कर्मों का फल हुआ, जिसमें सब को प्राप्त,
चलो आज यह हो गया, कुरु-वन-दहन समाप्त।

(सब गये)